अध्याय-1

क्वीर : अवधारणा एवं स्वरूप

अध्याय-1

क्वीर : अवधारणा एवं स्वरूप

'क्वीर' शब्द का उल्लेख आज विभिन्न सांस्कृतिक संदर्भों द्वारा देख सकते है चाहे वह पश्चिम संस्कृति हो या भारतीय । 'क्वीर' शब्द का व्यापक उपयोग व स्व-विवरण सन् 1869 में गढ़ की गई होमो सेक्सुआलीटी (समलैंगिकता) शब्द से जुडी है । समलैंगिकता के अंतर्गत आने वाले शब्दों की एक श्रृंखला में क्वीर का प्रयोग होता है । 'क्वीर' केवल एक पहचान भर नहीं, बल्कि मानव अस्तित्व की विविधता और संभावनाओं की एक साहसिक यात्रा का प्रतीक है । यह शब्द उन गहरी जड़ों वाली रूढ़ियों को चुनौती देता है, जिन्होंने युगों से समाज को यौनता और लिंग के कठोर बंधनों में बांध रखा है । यह एक ऐसा आंदोलन है, जो न केवल हाशिए पर खड़े जीवनों की अनसुनी धड़कनों को स्वर देता है, बल्कि उन्हें गरिमा, शक्ति और अपनी पहचान को खुलेपन से अपनाने का साहस भी प्रदान करता है।

1.1 क्वीर-अवधारणा

समाज में यह धारणा बनी है कि 'जेंडर' व 'सेक्स' पर्यायवाची है जबकि यह बिल्कुल अलग है। प्रसिद्ध भारतीय कार्यकर्ता और कवि कमला भसीन के शब्दों में "यह एक समस्या है । अंग्रेजी भाषा में दो अलग-अलग शब्द हैं सेक्स और जेंडर जबकि अधिकतर दक्षिण एशियाई भाषाओं - में हमारे पास एक ही शब्द है 'लिंग' जिसे सेक्स और जेंडर दोनों के लिए इस्तेमाल किया जाता है । इन दोनों में फर्क दर्शाने के लिए हमने दो शब्द ढूँढे हैं । सेक्स के लिए हम 'प्राकृतिक लिंग' तथा जेंडर के लिए 'सामाजिक लिंग' शब्द का इस्तेमाल कर सकते हैं । वास्तव में ये दोनों शब्द 'सेक्स' और 'जेंडर' शब्दों से बेहतर है क्योंकि इन शब्दों के जरिए उनका अर्थ भी साफ हो जाता है और आगे किसी तरह के स्पष्टीकरण की जरूरत नहीं होती । सामाजिक लिंग या जेंडर को हम छोटे रूप में सा लिंग कह सकते हैं और प्राकृतिक

लिंग को (सेक्स) को प्रालिंग''[1] । 'जेंडर' मानव रचित है जबकि 'सेक्स' जैविक है । किसी व्यक्ति की पहचान उनके लिंग और जेंडर से निर्धारित होती है ।

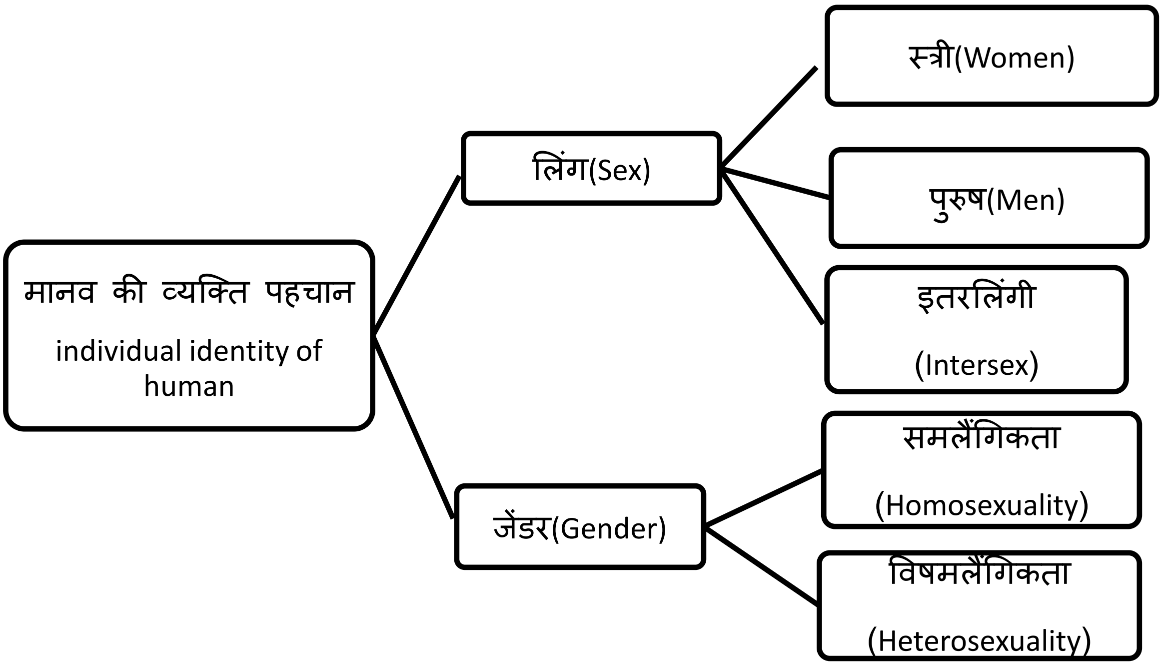

चित्र 1., लैंगिक अवधारणा

सन् 1968 में, मनोवैज्ञानिक रॉबर्ट जे.स्टोलर ने अपने शोध कार्य के तहत पचासी व्यक्तियों का पहचान करके अपनी किताब 'सेक्स एंड जेंडर:द डेवलपमेंट ऑफ़ मै स्क्युलिनिटी एंड फ़ेमिनिनिटी' में सेक्स और जेंडर के बीच के अंतर पर विस्तृत विचार प्रस्तुत किया है । स्टोलर ने तर्क दिया कि जेंडर को न केवल जैविक रूप से, बल्कि मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक संदर्भों से भी समझा जाना चाहिए । उनके अनुसार, सेक्स पुरुष और महिला की शारीरिक पहचान से संबंधित है, जबकि जेंडर स्त्रीत्व और पुरुषत्व की सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान से ये दोनों ही अवधारणाएँ प्राकृतिक लिंग संरचना से स्वतंत्र होकर अपनी विशिष्ट परिभाषा ग्रहण करती हैं ।

जेंडर और लैंगिकता के बारे में स्टोलर ने लिखा कि “लैंगिकता की सीख उन्हीं अवधारणाओं से होती है जो एक इन्सान को प्रसवोत्तर मुख्य और सांस्कृतिक रूप से सिखाया जाता है”[2] । स्टोलर का यह अध्ययन लिंग और जेंडर के बीच के भेद को स्पष्ट रूप से अलग-अलग समझाने और परिभाषित करने वाला पहला स्वतंत्र प्रयास था ।

1.1.1 सेक्स

सेक्स या लिंग शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा से हुई है । संस्कृत में ‘लिंग’ का मूल अर्थ ‘चिह्न’ या ‘संकेत’ होता है । इस शब्द का उपयोग किसी वस्तु, व्यक्ति, या विचार की पहचान करने वाले चिह्न या प्रतीक के रूप में किया जाता था । समय के साथ, इस प्रयोग शारीरिक पहचान और सामाजिक भूमिकाओं से संबंधित संदर्भों में होने लगा । संस्कृत ग्रंथों में ‘लिंग’ का उल्लेख अक्सर पुरुष और स्त्री के रूपों को दर्शाने के लिए किया गया है । इसके साथ ही, इसे प्रकृति के भिन्न चिह्नों के रूप में भी समझा गया है, जैसे स्त्रीलिंग, पुल्लिंग, और नपुंसकलिंग ।

लिंग(सेक्स) मानव की योनी से संबधित है । इसके आधार पर हम तय करते है कि व्यक्ति के लिंग क्या है । समग्र विश्व में दो योनि की आकृति मिलती है जिस्से हम नर एवं नारी को अलग करते हैं । लिंग(सेक्स), बुनियादी स्तर पर, महिलाओं और पुरुषों के बीच का जीव-वैज्ञानिक अन्तर है । मनुष्य या तो एक पुरुष के रूप में पैदा होता है, या एक स्त्री के रूप में , बच्चों की एक बहुत छोटी संख्या ऐसी भी है, जिनमें पुरुष और स्त्री की मिश्रित शरीर रचना पायी जाती है ।

टेस्टोस्टेरोन हार्मोन की न्यूनता के कारण, भ्रूण का लिंग पुरुष होते हुए भी, उसके हाव-भाव, बर्ताव, और स्वभाव स्त्रियों के समान हो सकते हैं । इस स्थिति में कुछ व्यक्तियों को पुरुष रूप में जीने की बजाय स्त्री के रूप में रहना और व्यवहार करना अधिक पसंद आता है । उनके हाव-भाव, बर्ताव, पहनावा, साथी का चुनाव और आत्म-परिचय स्त्री के समान होते हैं । इनमें से कुछ लोग पुरुष लिंग को स्वीकार नहीं करते, लेकिन स्त्री जैसे शारीरिक लक्षणों, जैसे

कि छाती और लिंग में परिवर्तन, की इच्छा रखते हैं । इसके परिणामस्वरूप, वे उपचार के लिए स्त्री हार्मोन थेरेपी(संप्रेरकों) की मांग करते हैं या लिंग परिवर्तन शल्यक्रिया का अनुरोध करते हैं।

1.1.2 जेंडर

'जेंडर' अंग्रेजी भाषा का शब्द है जिसका हिन्दी अर्थ 'लिंग' होता है । संस्कृत में यह 'प्रतीक' या 'लक्षण' के अर्थ में प्रयुक्त है । ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी में कणाद मुनि कृत विशुद्ध भौतिक विज्ञानवादी दर्शन 'वैशेषिक दर्शन ग्रंथ' में यह शब्द कई बार प्रयोग किया गया है । सेक्स के विपरीत, जेंडर की निर्मिति सामाजिक रूप से होता है । परिवार, समाज और अन्य सामाजिक-आर्थिक प्रथाओं जैसी सामाजिक संरचनाएँ शिशु के सेक्स के आधार पर विभेदों को निर्धारित करती हैं । इन विभेदों में कपड़े पहनना, व्यवहार, सामाजिक भूमिका, स्थिति, पहचान और जिम्मेदारी शामिल होते हैं । इस प्रकार जेंडर की निर्मिति की जाती है और उसका व्यवहार किया जाता है । जेंडर का वर्गीकरण तौर-तरीके, आचार-व्यवहार, पहनावा, शारीरिक संरचना, मनोविज्ञान, हार्मोन्स, भूमिका, जननांग इत्यादि, से होता है ।

सेक्स	**जेंडर**
प्राकृतिक (Natural) जैविक (Biological)	सामाजिक (Social)
कानूनीक दर्जा (Legal Status)	स्वयं पहचान (Self-Identity)
स्त्री और पुरुष (Men/ Women)	व्यवहार एवं दिखावट (Behavior/ Appearance)

चित्र 2., जेंडर और सेक्स में अंतर

मानवशास्त्री और नारीवादी लेखिका 'Lynda Birke' 1986 में अपनी पुस्तक 'Women, Feminism and Biology: The Feminist Challenges' में सेक्स और जेंडर पर बहस के दौरान जीवविज्ञान को भी साथ में रखकर देखने की बात करती हैं जो कि मनुष्य के प्राकृतिक संबंधों को समझने का एक वैज्ञानिक नजरिया है । " 'सेक्स' और 'जेंडर' दोनों में से कोई भी स्थिर नहीं है । जिस प्रकार मानव शरीर अपने आसपास के सामाजिक वातावरण के अनुकूल परिवर्तित

होता रहता है उसी प्रकार सेक्स और जेंडर भी"[3] । जेंडर का विचार समय और संस्कृति के साथ लगातार विकसित होता रहता है। आज के समाज में जेंडर समानता और विविधता को अपनाने पर विशेष जोर दिया जा रहा है। यह समझना बेहद महत्वपूर्ण है कि जेंडर किसी व्यक्ति की पहचान और उसके अधिकारों का एक अहम पहलू है, जिसे आदर और स्वीकृति के साथ मान्यता देना आवश्यक है।

1.1.3 लैंगिकता

लैंगिकता[Sexuality] को आमतौर पर यौन अभिविन्यास या यौन पहचान के रूप में जाना जाता है, और इसकी यौन पहचान स्पष्ट रूप से जैविक लिंग (सेक्स) श्रेणी से जुड़ी होती है । दूसरे शब्दों में, विभिन्न यौन अभिविन्यास जैसे विषमलैंगिक या समलैंगिक लिंग (सेक्स) श्रेणी के माध्यम से यौन आकर्षण का वर्णन करते हैं । दो सबसे प्रमुख यौन अभिविन्यास समान लिंग उन्मुख (same sex oriented) और विपरीत उन्मुख (opposite sex oriented) हैं, जिसे कुछ लोग समलैंगिक और विषमलैंगिक लैंगिकता कहते हैं । लैंगिकता विचारों, कल्पनाओं, इच्छाओं, विश्वासों, अभिवृत्तियों, मूल्यों, व्यवहारों, भूमिकाओं और सम्बन्धों में अभिव्यक्त होती है और महसूस की जाती है । लैंगिकता इन समस्त आयामों को शामिल कर सकती है, परन्तु ये सभी आयाम हमेशा महसूस या अभिव्यक्त नहीं किए जाते । "लैंगिकता जीव-वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, नैतिक, कानूनी, ऐतिहासिक और धार्मिक तथा आध्यात्मिक कारकों के सापेक्ष प्रभावित होती है"[4]।

लैंगिकता के संदर्भ में 'क्वीर' की अवधारणा विविधताओं से भरी हुई है, और इसके अंतर्गत आने वाली पहचानें अक्सर जटिल और विस्तृत होती हैं । एल जी बी टी क्यु + समुदाय में, अधिकांश विभाजन लैंगिकता (Sexuality) के आधार पर देखे जाते हैं, जबकि 'T' (ट्रांसजेंडर) और 'I' (इंटरसेक्स) का संबंध लिंग पहचान (Gender identity) और जैविक विशेषताओं (biological characteristics) से होता है ।

L (लेस्बियन), G (गे), B (बाइसेक्शुअल), और Q (क्वीर या क्वेश्चनिंग) जैसी पहचानें मुख्य रूप से व्यक्ति की लैंगिक अभिरुचि (Sexual orientation) को परिभाषित करती हैं । इनमें यह दर्शाया जाता है कि किसी व्यक्ति का आकर्षण किस लिंग या लिंगों की ओर है । दूसरी ओर, T (ट्रांसजेंडर) और I (इंटरसेक्स) लिंग से संबंधित हैं - ट्रांसजेंडर लिंग पहचान के संदर्भ में समाज की पारंपरिक अपेक्षाओं से अलग अनुभव को दर्शाता है, जबकि इंटरसेक्स जन्मजात शारीरिक विविधताओं को ।

लैंगिकता और लैंगिक पहचान जैविक, सामाजिक, सांस्कृतिक और व्यक्तिगत कारकों के मिश्रण से बनी एक बहुआयामी संरचना है । 'क्वीर' इन विविधताओं को स्वीकारने और पारंपरिक सीमाओं के परे मानव अस्तित्व की संभावनाओं को उजागर करता है । LGBTQIA+ समुदाय में, लैंगिकता मुख्य रूप से यौन अभिरुचि (Sexual orientation) को दर्शाती है, जबकि ट्रांसजेंडर और इंटरसेक्स पहचानें लिंग और जैविक विशेषताओं से जुड़ी हैं । यह समझना जरूरी है कि यह केवल व्यक्तिगत अभिव्यक्ति का हिस्सा नहीं, बल्कि स्वतंत्रता और गरिमा का प्रतीक है । एक समावेशी समाज के निर्माण के लिए इन विविधताओं को स्वीकार करना और प्रोत्साहित करना अनिवार्य है ।

1.2 क्वीर - अर्थ एवं परिभाषा

" 'क्वीर' अंग्रेजी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है कुछ अलग, अजीब, असाधारण या विचित्र"[5] । क्वीर लैंगिक और लैंगिक पहचान का वर्णन करता है । यहाँ "'क्वीर' शब्द एल जी बी टी का प्रतिनिधित्व करता है, एल जी बी टी आन्दोलन ने अपने को द्योतित करने के लिए इस शब्द का इस्तेमाल किया । अर्थात् 'क्वीर' शब्द एक छात्ता के समान है इसके नीचे सारे अल्पसंख्यक सेक्स और लिंग समाहित हैं जिनकी जन्म से कोई लैंगिक पहचान न हो"[6] । अंग्रेजी भाषा में यौन अस्मिता एवं कामभावना की अभिमुखता को दर्शाने वाले वर्गों हेतु 'LGBTIQ'

की अवधारणा का प्रचलन है । जिसके अंर्तगत लेस्बीयन, गे, बाईसेक्सुअल, ट्रांसजेंडर, ट्रांससेक्सुअल, इंटरसेक्स, 'क्वीर' सम्मिलित हैं ।

मशहूर एल जी बी टी क्यू और नारीवादी लेखिका 'अन्नामरिए जागोस' अपनी पुस्तक 'क्वीर थ्योरी आन इंट्रोडक्शन' में लिखा है कि "Once the term 'Queer' was at the best, slang for homosexual, at worst, a term of Homophobic abuse[7]" यानी पहले 'क्वीर' शब्द मुख्य रूप से एक अपमानजनक शब्द के रूप में प्रयोग किया जाता था, जो उन व्यक्तियों को लक्षित करता था जो विषमलैंगिक यौन और लिंग मानदंडों से बाहर माने जाते थे। इसके अतिरिक्त इसका उपयोग किसी के यौन अभिविन्यास या लिंग अभिव्यक्ति के आधार पर उनका मजाक उड़ाने या अपमानित करने के लिए भी प्रयोग किया जाता था । 'क्वीर' के संबध में कैंब्जि डिकशनरी में बताया है: "Having or relating to a gender identity or a sexuality that does not fit society's traditional ideas about gender or sexuality : He says they use the word 'Queer' to include anyone who wants to be included (gay, bi, trans, whatever)."[8] जेंडर और सेक्स के संबंध में पारंपरिक विचार यह है कि प्रत्येक व्यक्ति या तो स्त्री होगा या पुरुष, और उनका यौन संबंध केवल विपरीत लिंगी लोगों के साथ होगा। लेकिन 'QUEER' शब्द के अंतर्गत वे सभी लोग आते हैं जो इस परिभाषा या परंपरा से भिन्न हैं और इस पहचान से जुड़ना चाहते हैं। प्रसिद्ध नारीवादी लेखिका सोफी सैंट थॉमस और करीना हसन ने क्वीर के संबध में लिखा है कि " 'Queerness' is an umbrella term that is both an orientation and a community for those on the LGBTQIA Spectrum."[9] अर्थात 'क्वीरनेस' एक व्यापक शब्द है जो LGBTQIA स्पेक्ट्रम पर मौजूद लोगों के लिए एक अभिविन्यास और एक समुदाय दोनों है। कॉलिंस इंग्लिश डिक्शनरी में बताया है- "A queer is someone whose sexual orientation is not heterosexual or whose gender identity is not traditionally male or female. This use can sometimes cause offence"[10], मतलब है कि एक क्वीर वह व्यक्ति होता है जिसका यौन अभिविन्यास विषमलैंगिक नहीं होता है या जिसकी लिग पहचान पारंपरिक रूप से पुरुष या महिला नहीं होती है । पीटर एक्रोय् ने अपनी पुस्तक 'क्वीर सिटी' में क्वीर शब्द

की अवधारणगत व्याख्याएँ करते हुए लिखा है- " 'Queer' was once a term signifying disgust, but now it is pronounced with a difference. It has become the academic word of choice, and 'queer studies' are part of the university curriculum"[11] 'क्वीर' कभी ऐसा शब्द था जो घृणा और उपेक्षा का प्रतीक माना जाता था, परंतु अब इसे एक नई भंगिमा में उच्चारित किया जाता है । यह अकादमिक क्षेत्र में एक प्रतिष्ठित शब्द बन चुका है, और 'क्वीयर अध्ययन' अब विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम का हिस्सा है ।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि अधिकांश आलोचकों ने उन लोगों को क्वीर के अंतर्गत शामिल किया है जिनकी यौन इच्छाएं विषमलैंगिक या विपरीत लिंग की नहीं हैं और वे पारंपरिक लिंग मानदंडों के अंतर्गत आने वाले पुरुष या महिला नहीं हैं।

1.3 क्वीर: उत्पत्ति एवं विकास

क्वीर एक ऐसा विचार है, जो मानवीय चेतना की सीमाओं को तोड़ते हुए परंपराओं और रूढ़ियों से परे नई संभावनाओं को स्वीकार करता है। इसका इतिहास उन अनकही कहानियों और दबे हुए स्वरों से भरा है, जिन्होंने समानता और स्वीकृति के लिए लगातार संघर्ष किया। यह उन सामाजिक धारणाओं को नकारता है, जो यौनिकता और लिंग को सीमित परिभाषाओं में कैद करने का प्रयास करती हैं। समय के साथ, समाज के विरोध और तिरस्कार के बावजूद, यह विचार नकारात्मकता से बाहर निकलकर एक सशक्त पहचान का प्रतीक बन गया। जहां पहले इसे तिरस्कार की दृष्टि से देखा गया था, वहीं अब यह स्वतंत्रता और गरिमा का पर्याय है। यह विचार उन सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत है, जो अपनी मौलिकता के साथ जीने और अपनी पहचान को गर्व से स्वीकारने की चाह रखते हैं। इतिहास के अवरोधों को पार करते हुए, यह आज एक उज्जवल और समावेशी भविष्य की दिशा में निरंतर अग्रसर है।

'क्वीर' शब्द का मूल 16वीं सदी के अंग्रेजी साहित्य में पाया जाता है, जहाँ इसका अर्थ 'असामान्य', 'अजीब', या 'भिन्न' होता था । यह शब्द किसी व्यक्ति या स्थिति को परिभाषित

करने के लिए उपयोग किया जाता था, जो पारंपरिक मानकों से भिन्न होती थी । 19वीं शताब्दी में, 'क्वीर' शब्द का उपयोग समलैंगिक पुरुषों को अपमानित करने के लिए किया जाने लगा । यह शब्द उन लोगों को नीचा दिखाने के लिए प्रयोग किया गया, जो सामाजिक और यौनिक मानदंडों से अलग था, यह शब्द उनके व्यवहार, पहचान, या यौनिकता को असामान्य या विकृत बताने के लिए प्रयुक्त होता था। 20वीं सदी के उत्तरार्ध में, एल जी बी टी क्यु + समुदाय ने 'क्वीर' शब्द को पुनः परिभाषित करके इसे अपमानजनक संदर्भों से हटाकर गर्व और पहचान के प्रतीक के रूप में अपनाया गया ।

1.3.1 पाश्चात्य परिप्रेक्ष्य

पाश्चात्य समाज में 'क्वीर' की अवधारणा और एल जी बी टी क्यु + समुदाय का संघर्ष एक गहरी और जटिल ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से जुड़ा हुआ है । पाश्चात्य संस्कृति में लैंगिकता और यौनिकता का इतिहास धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक मानदंडों द्वारा नियंत्रित रहा है। मध्यकालीन यूरोप से लेकर आधुनिक युग तक, यौन और लैंगिक विविधताओं को कभी पाप, कभी अपराध और कभी मानसिक बीमारी के रूप में देखा गया है । 20वीं शताब्दी में, एल जी बी टी क्यु + समुदाय ने अपने अधिकारों के लिए एक व्यापक और संगठित संघर्ष शुरू किया, जिसे हम आज 'क्वीर आंदोलन' के रूप में जानते हैं।

1.3.1.1 शुरुआती दौर

पश्चिमी समाज में क्वीर समुदाय की पहचान और अधिकारों को लेकर चर्चा का आरंभ 19वीं सदी से माना जा सकता है। इस युग में वैज्ञानिक शोध और मनोवैज्ञानिक अध्ययनों ने यौनिकता को वर्गीकृत करना शुरू किया। 'समलैंगिकता' शब्द का पहली बार उपयोग 19वीं सदी के उत्तरार्ध में हुआ। इस सदी में समलैंगिकों और ट्रांसजेंडर लोगों को समरूप समझा जाता था । आरंभ में, सार्वजनिक रूप से यौन अल्पसंख्यकों को सुरक्षा और मान्यता देने के लिए और

उन्हें उनके खिलाफ सार्वजनिक रूप से उठने वाले विरोध से बचाने के लिए 'क्वीरबद्ध' आंदोलन उभर कर आ गया । कई पश्चिमी देशों में, इस चर्चा का समाज पर गहरा प्रभाव था । ईसाई धर्म के नैतिक और धार्मिक नियमों ने समलैंगिकता को पाप और दंडनीय अपराध घोषित किया । इस धार्मिक दृष्टिकोण के चलते एल जी बी टी क्यु + व्यक्तियों को सामाजिक बहिष्कार, उत्पीड़न और हिंसा का सामना करना पड़ा । 16वीं और 17वीं शताब्दी में, यूरोप में समलैंगिकता के लिए कठोर दंड, जैसे मृत्युदंड और सार्वजनिक अपमान, सामान्य थे।

1.3.1.2 आधुनिक युग और आंदोलन की शुरुआत

20वीं सदी के प्रारंभ में, एल जी बी टी क्यु + अधिकारों के लिए संघर्ष का आरंभ हुआ । 1920 और 1930 के दशक में, जर्मनी इनके अधिकारों के लिए एक प्रमुख केंद्र बना । सेक्सोलॉजिस्ट मैग्नस हिर्शफेल्ड ने एल जी बी टी क्यु + अधिकारों के समर्थन में कई अध्ययन और आंदोलन चलाए । मैग्नस हिर्शफेल्ड(Magnus Hirschfeld) एक प्रसिद्ध जर्मन सेक्सोलॉजिस्ट, चिकित्सक, और एल जी बी टी क्यु + अधिकारों के शुरुआती समर्थकों में से एक थे । उन्हें 'आधुनिक यौन विज्ञान के पितामह' और एल जी बी टी क्यु + अधिकार आंदोलन के शुरुआती नेताओं में गिना जाता है । उन्होंने समलैंगिकता और ट्रांसजेंडर पहचान को स्वाभाविक और जन्मजात मानते हुए इसे मानसिक बीमारी या नैतिक पतन मानने का विरोध किया। 1897 में, उन्होंने वैज्ञानिक-मानविकी समिति की स्थापना की, जो एल जी बी टी क्यु + अधिकारों के लिए समर्पित दुनिया का पहला संगठन था, और इसका उद्देश्य जर्मनी के पैराग्राफ 175 जैसे दमनकारी कानूनों को समाप्त करना था । 1919 में, उन्होंने बर्लिन में इंस्टीट्यूट फॉर सेक्सुअल रिसर्च की स्थापना की, जो एल जी बी टी क्यु + समुदाय को चिकित्सा और कानूनी सहायता प्रदान करने के साथ-साथ यौनिकता पर शोध के लिए प्रमुख संसाधन केंद्र था। हिर्शफेल्ड ने यौन शिक्षा और एल जी बी टी क्यु + समुदाय की समझ बढ़ाने के लिए लेख, पुस्तकें और व्याख्यान प्रस्तुत किए, और उन्होंने यौनिकता को एक स्पेक्ट्रम के रूप में व्याख्यायित करते हुए विभिन्न यौन पहचानों

को समाज में स्वीकार्यता दिलाने की वकालत की। नाजी शासन के दौरान उनके संस्थान को बंद कर दिया गया और इसके अभिलेख जला दिए गए, लेकिन उन्होंने अपने कार्यों और संघर्षों से एल जी बी टी क्यु + समुदाय के प्रति समर्थन जारी रखा । हिर्शफेल्ड ने पहली बार 'ट्रांससेक्सुअल' और 'ट्रांसजेंडर' जैसे शब्दों को परिभाषित किया और ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के लिए सर्जिकल समाधान और पहचान के अधिकार का समर्थन किया। उनका जीवन एल जी बी टी क्यु + अधिकार आंदोलन और यौनिकता के वैज्ञानिक अध्ययन में एक मील का पत्थर है।

लैवेंडर स्केयर 1950 के दशक का एक ऐतिहासिक सामाजिक-राजनीतिक आंदोलन था, जो क्वीर समुदाय के प्रति गहरे भेदभाव और पूर्वाग्रह का प्रतीक है । यह उस समय हुआ जब अमेरिका में 'रेड स्केयर' के कारण साम्यवाद का भय चरम पर था । समलैंगिक व्यक्तियों को 'राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा' मानते हुए आरोप लगाया गया कि वे ब्लैकमेल का शिकार होकर सोवियत संघ के लिए जासूसी कर सकते हैं । इस निराधार धारणा को सीनेटर जोसेफ मैक्कार्थी और उनके समर्थकों ने प्रबलता से फैलाया । इसके चलते एल जी बी टी क्यु + समुदाय के सदस्यों को सरकारी नौकरियों से हटाने का सिलसिला शुरू हुआ, जिससे उनके जीवन और करियर पर गहरा प्रभाव पड़ा। इस भयावह दौर में न केवल उनके अधिकारों का हनन हुआ, बल्कि उन्हें समाज में अपमान और बहिष्कार का सामना भी करना पड़ा । लैवेंडर स्केयर उस इतिहास का हिस्सा है, जिसने अन्याय और असमानता की जटिलताओं को उजागर किया, और यह इस बात का प्रमाण है कि भय और पूर्वाग्रह कैसे व्यक्तिगत स्वतंत्रता और गरिमा को हाशिए पर धकेल सकते हैं।

1953 में राष्ट्रपति ड्वाइट डी. आइज़नहावर द्वारा जारी एग्जीक्यूटिव ऑर्डर 10450 ने "यौन विचलन" (sexual perversion) को संघीय रोजगार से अयोग्यता का आधार बना दिया । इस नीति के तहत एल जी बी टी क्यु + व्यक्तियों को 'चरित्रहीन' और 'राष्ट्रीय खतरा' करार दिया गया । इससे न केवल क्वीर समुदाय के सदस्य अपनी नौकरियों से हाथ धो बैठे, बल्कि उन्हें

सामाजिक बहिष्कार, सार्वजनिक शर्मिंदगी, और व्यक्तिगत जीवन में भी भेदभाव का सामना करना पड़ा । मानसिक स्वास्थ्य पर इसके गहरे प्रभाव देखे गए, जिसमें आत्महत्याओं की घटनाएँ भी शामिल थीं।

1.3.1.3 स्टोनवॉल विद्रोह और क्वीर आंदोलन का आरंभ

स्टोनवॉल विद्रोह 1969 में न्यूयॉर्क शहर के ग्रीनविच विलेज स्थित स्टोनवॉल इन में हुआ, जिसने क्वीर अधिकारों की लड़ाई में एक मील का पत्थर स्थापित किया। यह आंदोलन उस समय शुरू हुआ, जब एल जी बी टी क्यु + समुदाय के सदस्यों ने पुलिस की बर्बरता और असमानता के खिलाफ अपना रोष व्यक्त किया। उन दिनों, समलैंगिक व्यक्तियों को कानूनी और सामाजिक रूप से हाशिए पर रखा गया था। स्टोनवॉल इन, जो क्वीर समुदाय के लिए एक सुरक्षित स्थान था, पुलिस छापेमारी का नियमित लक्ष्य बनता था। 28 जून की रात को, जब पुलिस ने एक बार फिर छापा मारा, तो समुदाय के सदस्यों ने चुप रहने के बजाय प्रतिरोध का रास्ता चुना।

इस विद्रोह ने न केवल एक ऐतिहासिक घटना को जन्म दिया, बल्कि यह वैश्विक स्तर पर एल जी बी टी क्यु + अधिकारों के लिए एक आंदोलन की शुरुआत थी। यह विरोध, जो कई दिनों तक चला, उस आक्रोश और असंतोष का परिणाम था जो दशकों से भीतर सुलग रहा था। इसके बाद, अधिकारों के लिए लड़ने वाले संगठनों का उदय हुआ और गर्व परेड जैसी परंपराएं अस्तित्व में आईं। स्टोनवॉल विद्रोह ने न केवल स्वतंत्रता और समानता की आवाज को बुलंद किया, बल्कि यह उन सभी के लिए प्रेरणा बन गया, जो अपनी पहचान के साथ न्याय चाहते थे।

1970 के दशक में, अमेरिका और यूरोप में एल जी बी टी क्यु + समुदाय ने खुद को संगठित करना शुरू किया । प्राइड परेड का आयोजन किया गया, और लोग अपने अधिकारों के

लिए कानूनी और सामाजिक स्तर पर संघर्ष शुरू हुआ । इस दशक में कई क्वीर संगठन और पत्रिकाओं का उदय हुआ, जो समुदाय को जागरूक और सशक्त बनाने का काम करते थे ।

1.3.1.4 क्वीर सिद्धान्त

1990 का दशक एल जी बी टी क्यु + आंदोलन के इतिहास में एक और महत्वपूर्ण चरण था । इस दौरान, "क्वीर" शब्द को पुनः परिभाषित किया गया और इसे एक राजनीतिक और बौद्धिक आंदोलन के रूप में स्थापित किया गया । जुडिथ बटलर की पुस्तक Gender Trouble (1990) ने 'क्वीर थ्योरी' की नींव रखी । जिसमें यौनिकता और लैंगिकता को पारंपरिक द्विआधारी संरचनाओं, जैसे पुरुष/महिला और विषमलैंगिक/समलैंगिक, से परे देखा है । इसने यह स्थापित किया कि लिंग और यौनिकता सामाजिक रूप से निर्मित और परिवर्तनशील हैं । यह विचारधारा क्वीर समुदाय के लिए एक सशक्त बौद्धिक औजार बन गई ।

क्वीर सिद्धांत का मूल उद्देश्य यह है कि समाज द्वारा निर्धारित मानदंडों और श्रेणियों को चुनौती दी जाए, जो व्यक्ति की पहचान और यौनिकता को सीमित कर देती हैं। यह आंदोलन इस विचार को बढ़ावा देता है कि पहचान कोई स्थायी और अपरिवर्तनीय स्थिति नहीं है, बल्कि यह एक तरल, बहुआयामी और लगातार बदलने वाली प्रक्रिया है। यह 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में उभरा और साहित्यिक आलोचना, समाजशास्त्र, सांस्कृतिक अध्ययन और नारीवाद जैसे विभिन्न क्षेत्रों से प्रेरित हुआ । निर्माणवाद और उत्तरसंरचनावाद के विचारों पर आधारित यह सिद्धांत उन सामाजिक संरचनाओं की पड़ताल करता है, जो लैंगिक और लैंगिक पहचानों को परिभाषित और नियंत्रित करती हैं ।

जूडिथ बटलर, जो क्वीर सिद्धांत की प्रमुख विचारकों में से एक हैं, अपनी पुस्तक जेंडर ट्रबल (1990) में कहते हैं, "There is no gender identity behind the expressions of gender; that identity is performatively constituted by the very 'expressions' that are said to be its results." [12].

क्वीर सिद्धांत पितृसत्ता और विषमलैंगिकता के नारीवादी आलोचनाओं से विकसित हुआ । दूसरी लहर की नारीवादियों, जैसे सिमोन द बुआर ने अपनी पुस्तक द सेकंड सेक्स (1949) में कहा, “One is not born, but rather becomes, a woman”[13] (कोई स्त्री पैदा नहीं होती, बल्कि स्त्री बनती है।) यह दर्शाते हुए कि लैंगिक भूमिकाएं सामाजिक रूप से निर्मित होती हैं । यह आधारभूत विचार जूडिथ बटलर सहित उन विचारकों को प्रेरित करता है, जिन्होंने जेंडर के परफॉर्मेटिव स्वभाव को नए आयाम दिए और इसे अधिक विस्तृत रूप में प्रस्तुत किया । बटलर ने जेंडर को एक अपरिवर्तनीय और स्थायी पहचान के बजाय, सामाजिक और सांस्कृतिक प्रदर्शन के रूप में देखा । उनके अनुसार, जेंडर वह नहीं है जो हम हैं, बल्कि वह है जो हम अपने कार्यों, व्यवहारों, और सामाजिक सहभागिता के माध्यम से बार-बार प्रकट करते हैं ।

उत्तरसंरचनावादी विचारकों, विशेष रूप से मिशेल फूको, ने लैंगिकता को एक सामाजिक निर्माण के रूप में समझने की आधारशिला रखी । अपनी पुस्तक द हिस्ट्री ऑफ सेक्सुअलिटी (1976) में, फूको लिखते हैं, “Sexuality must not be thought of as a kind of natural given… but as a historical construct.”[14] 'क्वीर' शब्द का ऐतिहासिक रूप से एल जी बही टी + व्यक्तियों के खिलाफ अपमानजनक रूप से उपयोग किया गया था । 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में, कार्यकर्ताओं और विद्वानों ने इस शब्द को विद्रोह और सशक्तिकरण के एक अधिनियम के रूप में पुनःअधिग्रहीत किया । ईव कोसोफ्स्की सेडविक अपनी पुस्तक एपिस्टेमोलॉजी ऑफ द क्लोज़ेट (1990) में कहती हैं, “Queer is a continuing moment, movement, motive—recurrent, eddying, troublant.[15]” क्वीर सिद्धांत 21वीं सदी में लगातार विकसित हो रहा है । डिजिटल प्लेटफॉर्म्स ने क्वीर आवाज़ों को बढ़ावा दिया है, जो प्रतिनिधित्व और सक्रियता के लिए नए स्थान बना रहे हैं। साथ ही, विभिन्न देशों में एल जी बी टी अधिकारों के खिलाफ प्रतिक्रियाओं से पता चलता है कि दमन का विरोध करने में क्वीर सिद्धांत की प्रासंगिकता अभी भी कितने महत्वपूर्ण है ।

क्वीर सिद्धांत केवल एक शैक्षणिक विषय नहीं है; यह उन मानदंडों को समझने और चुनौती देने के लिए एक परिवर्तनकारी दृष्टिकोण है, जो मानव पहचान को आकार देते हैं । यह द्विआधारी ढांचों को विघटित करके, शक्ति संरचनाओं पर सवाल उठाकर, और तरलता को अपनाकर, लैंगिकता, जेंडर और आत्मसत्ता के बारे में हमारी सोच को फिर से परिभाषित करता है । आज, 'क्वीर अध्ययन' विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों का हिस्सा है और सामाजिक विज्ञान और मानविकी के क्षेत्रों में एक महत्वपूर्ण विचारधारा के रूप में मान्यता प्राप्त है।

1.3.1.5 एड्स महामारी और क्वीर आंदोलन

एड्स महामारी ने 1980 के दशक में क्वीर समुदाय के लिए एक अभूतपूर्व संकट खड़ा कर दिया, जिसने समाज में पहले से मौजूद संकीर्ण मानसिकता और असमान व्यवहार को और गहरा कर दिया। इस घातक बीमारी को प्रारंभिक वर्षों में ‘गे प्लेग’ कहकर सामाजिक दुराव का सामना करना पड़ा, जिससे संक्रमित व्यक्तियों को चिकित्सा सहायता, सहानुभूति और समर्थन से वंचित किया गया। ऐसे चुनौतीपूर्ण समय में, आंदोलनकारियों ने इस उपेक्षा के खिलाफ अपने संघर्ष को तेज किया । ACT UP (AIDS Coalition to Unleash Power) जैसे संगठनों का गठन हुआ, जिसने चिकित्सा शोध, जीवन रक्षक दवाओं की उपलब्धता और सरकारी उदासीनता को चुनौती देने के लिए व्यापक अभियान चलाया।

इस प्रयास ने न केवल जागरूकता फैलाई, बल्कि स्वास्थ्य अधिकारों की लड़ाई को नई दिशा दी। इसी दौरान, क्वीर नेशन जैसे समूहों ने एल जी बी टी क्यु + समुदाय की गरिमा और अधिकारों के लिए जोरदार तरीके से अपनी आवाज उठाई। उन्होंने एड्स के बहाने समाज में फैलाई जा रही नकारात्मक सोच और अलगाव का विरोध किया और समावेशिता तथा समानता का संदेश फैलाया। एड्स महामारी के इस कठिन दौर ने एल जी बी टी क्यु + आंदोलन को और अधिक सशक्त किया, जिससे समुदाय ने अपनी पहचान और अधिकारों के लिए एकजुट होकर संघर्ष किया और सामाजिक बदलाव की नींव रखी।

1.3.1.6 कानूनी और सामाजिक उपलब्धियाँ

1990 और 2000 के दशक में एल जी बी टी क्यु + आंदोलन ने कई कानूनी उपलब्धियां हासिल कीं ।

- 2001 में नीदरलैंड्स ने समलैंगिक विवाह को वैध कर दिया।
- 2003 में अमेरिका में *Lawrence v. Texas* मामले में सुप्रीम कोर्ट ने समलैंगिकता को अपराध घोषित करने वाले कानून को रद्द कर दिया।
- 2015 में अमेरिका में समलैंगिक विवाह को संघीय स्तर पर वैध कर दिया गया।
- यूरोप और लैटिन अमेरिका के कई देशों ने क्वीर समुदाय के अधिकारों की सुरक्षा और समावेशिता को बढ़ावा देने के लिए प्रगतिशील नीतियाँ अपनाई हैं। इनमें से कुछ प्रमुख कदम निम्नलिखित हैं:

यूरोप में:

- माल्टा: माल्टा ने 2004 में किसी भी यौन वरीयता या लैंगिक पहचान के आधार पर भेदभाव पर रोक लगाई। 2016 में, यह गे कनवर्ज़न थेरेपी को गैरकानूनी घोषित करने वाला पहला देश बना ।
- पुर्तगाल: 2010 में समलैंगिक विवाह को कानूनी मान्यता दी गई, और इसके बाद समान-लिंग वाले जोड़ों को बच्चे गोद लेने का अधिकार भी प्रदान किया गया।
- स्वीडन: स्वीडन ने LGBTQ+ समुदाय की सुरक्षा के लिए कई कानून बनाए हैं। यहाँ 75 साल पहले ही समान-लिंग के बीच संबंधों को अपराध की श्रेणी से बाहर कर दिया गया था।

लैटिन अमेरिका में:

- उरुग्वे: 1934 में समान-लिंग के बीच संबंधों को अपराध की श्रेणी से हटा दिया गया था। 2004 में, क्वीर समुदाय की सुरक्षा के लिए कई कानून बनाए गए।
- कोलंबिया: सुप्रीम कोर्ट ने 2016 में समलैंगिक विवाह को कानूनी मान्यता दी, जिससे यह लैटिन अमेरिका के प्रगतिशील देशों में शामिल हो गया।

इन प्रगतिशील नीतियों के माध्यम से, इन देशों ने LGBTQ+ समुदाय के अधिकारों की रक्षा और समावेशिता को सुनिश्चित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं s।

इसके बावजूद, कला, सिनेमा और साहित्य में समलैंगिक व्यक्तियों की उपस्थिति ने उन्हें मुख्यधारा में स्थान दिलाने में मदद की है । फिल्में जैसे 'Brokeback Mountain', 'Moonlight', और टीवी शो 'RuPaul's Drag Race ने क्वीर समुदाय की पहचान को मजबूत किया है । इसके साथ ही, प्राइड परेड और एल जी बी टी कयु + संगठनों की सक्रियता ने समाज को अधिक समावेशी बनाने की दिशा में काम किया है ।

पाश्चात्य परिप्रेक्ष्य में क्वीर आंदोलन का विकास एक लंबी और संघर्षपूर्ण यात्रा रही है । इसने न केवल क्वीर समुदाय को कानूनी अधिकार दिलाने में सफलता प्राप्त की है, बल्कि समाज में यौन और लैंगिक विविधताओं के प्रति सहिष्णुता और स्वीकृति बढ़ाने में भी योगदान दिया है ।

1.3.2 भारतीय परिप्रेक्ष्य

भारत में 'क्वीर' की अवधारणा और एल जी बी टी कयु + समुदाय की स्थिति गहरी ऐतिहासिक, सामाजिक, और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से जुड़ी हुई है । भारतीय समाज में लिंग और यौन विविधताओं को समय के साथ बदलते दृष्टिकोण और संदर्भों के माध्यम से समझा और

परखा गया है । समाज के विभिन्न युगों में इन विविधताओं को कभी स्वीकार्यता, तो कभी असहमति के साथ देखा गया, लेकिन उनकी उपस्थिति ने हमेशा सांस्कृतिक और सामाजिक संरचनाओं को प्रभावित किया है । विदेशी शासनकाल के दौरान भारतीय समाज ने ब्रिटिश कानूनों और नैतिक मानदंडों को अपनाते हुए LGBTQ+ व्यक्तियों के प्रति भेदभावपूर्ण दृष्टिकोण विकसित किया । 21वीं सदी में, क्वीर समुदाय ने अपने अधिकारों के लिए एक सशक्त आंदोलन शुरू किया, जिससे समाज और कानून दोनों में सकारात्मक बदलाव दिखाई देने लगे ।

1.3.2.1 पौराणिक और ऐतिहासिक संदर्भ: एक झाँकी

भारतीय संस्कृति में एल जी बी टी कयु + व्यक्तियों और क्वीर पहचान का उल्लेख हजारों वर्षों से मिलता है । प्राचीन भारतीय ग्रंथों, कला, और साहित्य में यौन और लैंगिक विविधताओं को खुले तौर पर स्वीकार किया गया था । महाभारत में शिखंडी का चरित्र, जो जन्म से स्त्री थे लेकिन पुरुष के रूप में जीवन व्यतीत करते हैं, हिजडा समुदाय के लिए एक प्रमुख उदाहरण है । इसी तरह, भगवान विष्णु का मोहिनी रूप धारण करना और शिव के साथ उनका प्रेम, लैंगिकता के पारंपरिक मानकों से परे संबंधों को दर्शाता है । अर्धनारीश्वर की अवधारणा, जिसमें शिव और पार्वती का संयुक्त रूप दिखाया गया है, यह इंगित करती है कि लैंगिक पहचान का द्विआधारी विभाजन (पुरुष/महिला) अपर्याप्त है । वात्स्यायन जी के कामसूत्र में भी यौन विविधता को मान्यता दी गई है, जहाँ 'तृतीय प्रकृति' के रूप में उन व्यक्तियों का उल्लेख किया गया है, जो पारंपरिक विषमलैंगिक मानदंडों से बाहर हैं । मध्यकालीन भारतीय कला और मंदिरों, जैसे खजुराहो और कोणार्क के मंदिरों की मूर्तियों में समलैंगिक प्रेम और यौनिकता को प्राकृतिक और जीवन का अभिन्न हिस्सा मानते हुए चित्रित किया गया है । ये संदर्भ दर्शाते हैं कि प्राचीन भारतीय समाज ने यौनिकता और लैंगिकता को लचीले और समावेशी दृष्टिकोण से देखा था ।

1.3.2.2 आधुनिक भारत में क्वीर आंदोलन का आरंभ एवं धारा 377

19वीं शताब्दी में ब्रिटिश शासन के तहत भारतीय समाज में एल जी बी टी कयु + व्यक्तियों के प्रति दृष्टिकोण में नकारात्मक बदलाव आया । 1860 में ब्रिटिश साम्राज्य ने भारतीय दंड संहिता में धारा 377 लागू की, जिसके तहत 'प्राकृतिक' यौन संबंधों (विपरीत लिंग के बीच) के अलावा अन्य सभी यौन गतिविधियों को अपराध घोषित किया गया। यह कानून समलैंगिक संबंधों को दंडनीय बनाता था । ब्रिटिश शासन, जिसने यह प्रावधान भारत में लागू किया था, 1967 में अपने देश में इसे अपराध की श्रेणी से बाहर कर दिया ।

1947 में भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद भी क्वीर समुदाय औपनिवेशिक कानूनों(धारा 377) और सामाजिक रूढ़िवाद के प्रभाव से मुक्त नहीं हो पाया । समलैंगिकता को मानसिक विकार के रूप में देखा गया, और हिजड़ा समुदाय को कानूनी और सामाजिक अधिकारों से वंचित रखा गया । 1980 के दशक में एड्स महामारी ने एल जी बी टी कयु + समुदाय पर गहरा असर डाला, जब समलैंगिक पुरुषों को एड्स फैलाने का दोषी ठहराया गया। 1990 के दशक में एड्स जागरूकता कार्यक्रमों ने इस समुदाय के अधिकारों के लिए मंच तैयार किया। इसी दौरान, एल जी बी टी कयु + अधिकारों के लिए संगठनों और संस्थाओं की स्थापना होने लगी। 1994 में भारत की पहली एल जी बी टी कयु + पत्रिका 'बॉम्बे दोस्त' प्रकाशित हुई, जो समुदाय की आवाज़ बनी।

2000 के दशक में भारत में एल जी बी टी कयु + समुदाय ने कानूनी और सामाजिक स्तर पर बड़े संघर्षों का सामना किया । 2001 में नाज़ फाउंडेशन ने भारतीय दंड संहिता की धारा 377 को दिल्ली हाईकोर्ट में चुनौती दी, जो समलैंगिक संबंधों को अपराध घोषित करती थी । यह मामला LGBTQ+ अधिकारों के लिए एक महत्वपूर्ण मोड़ बना ।

2009 में, नाज़ फाउंडेशन बनाम दिल्ली सरकार मामले में, दिल्ली उच्च न्यायालय ने धारा 377 पर पुनर्विचार करते हुए इसे असंवैधानिक घोषित किया। अदालत ने यह तर्क स्वीकार किया

कि सहमति से बने यौन संबंधों को अपराध मानना संविधान के अनुच्छेद 14 (कानून के समक्ष समानता), 15 (भेदभाव का निषेध), और 21 (जीवन और स्वतंत्रता का अधिकार) का उल्लंघन है। इस निर्णय को LGBTQ+ समुदाय के लिए बड़ी जीत माना गया। लेकिन 2013 में सुप्रीम कोर्ट ने 'कौशल जजमेंट' के तहत यह कहते हुए फैसला पलट दिया कि धारा 377 को बनाए रखना या हटाना संसद का कार्यक्षेत्र है।

6 सितंबर 2018 को भारत के एल जी बी टी क्यु + आंदोलन को ऐतिहासिक सफलता मिली, जब सुप्रीम कोर्ट ने धारा 377 को असंवैधानिक घोषित करते हुए एल जी बी टी क्यु + समुदाय को यौनिक स्वतंत्रता का अधिकार दिया। यह निर्णय एल जी बी टी क्यु + अधिकारों की दिशा में सबसे बड़ी जीत थी, जिसने उन्हें कानूनी और सामाजिक मान्यता दिलाई। इससे पहले, 2014 में नालसा बनाम भारत संघ मामले में सुप्रीम कोर्ट ने ट्रांसजेंडर व्यक्तियों को "थर्ड जेंडर" के रूप में मान्यता दी, जिससे उनके कानूनी अधिकारों को बल मिला। 2019 में ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के अधिकारों की सुरक्षा के लिए विधेयक पारित हुआ, जो उनके समानता और गरिमा के अधिकार को सुनिश्चित करने की दिशा में एक और बड़ा कदम था। समाज में बदलाव के रूप में प्राइड परेड और एल जी बी टी क्यु + संगठनों की सक्रियता ने इस समुदाय की पहचान को मजबूत किया। फिल्म, साहित्य, और सोशल मीडिया ने एल जी बी टी क्यु मुद्दों पर चर्चा और जागरूकता को प्रोत्साहित करते हुए समाज को अधिक समावेशी बनाने की दिशा में योगदान दिया।

2019 में ट्रांसजेंडर व्यक्ति (अधिकार संरक्षण) अधिनियम लागू किया गया, जिसने शिक्षा, रोजगार और स्वास्थ्य सेवाओं के अधिकार सुनिश्चित किए।

2019 के बाद एल जी बी टी क्यु + अधिकारों को लेकर भारत में नई बहसों और पहल की शुरुआत हुई। समलैंगिक विवाह को कानूनी मान्यता देने की मांग तेज हुई, और इस पर कई जनहित याचिकाएँ दायर की गईं।

2021 में दिल्ली उच्च न्यायालय में समान-लिंग विवाह को मान्यता देने के लिए सुनवाई शुरू हुई। इस मुद्दे पर क्वीर समुदाय के लिए व्यापक समर्थन प्राप्त हुआ, और न्यायपालिका ने सरकार से जवाब मांगा।

2023 में, भारत में समलैंगिक विवाह को कानूनी मान्यता देने के मुद्दे ने व्यापक चर्चा और बहस को जन्म दिया । 18 अक्टूबर 2023 को सर्वोच्च न्यायालय ने इस विषय पर दायर याचिकाओं को यह कहते हुए खारिज कर दिया कि विवाह का अधिकार न्यायपालिका नहीं, बल्कि संसद के अधिकार क्षेत्र का हिस्सा है । न्यायालय ने विवाह को मौलिक अधिकार के रूप में परिभाषित करने से इनकार कर दिया, परंतु यह स्पष्ट किया कि LGBTQIA+ समुदाय के सदस्यों के साथी चुनने के अधिकार का संरक्षण होना चाहिए। साथ ही, केंद्र सरकार को यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया गया कि समलैंगिक जोड़ों के साथ किसी भी प्रकार का भेदभाव न हो ।

अप्रैल 2023 में, विशेष विवाह अधिनियम, 1954 के तहत समलैंगिक जोड़ों को विवाह का अधिकार देने के लिए दायर याचिकाओं पर सुनवाई आरंभ हुई। याचिकाकर्ताओं ने तर्क दिया कि समलैंगिक जोड़ों को विवाह के अधिकार से वंचित करना संविधान के अनुच्छेद 14 (समानता का अधिकार), 19 (अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता), और 21 (जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता) का उल्लंघन है।

अप्रैल 2024 में, सुप्रीम कोर्ट के सुप्रियो फैसले के निर्देशानुसार, मोदी सरकार ने एक छह-सदस्यीय आयोग की स्थापना की, जिसका उद्देश्य एल जी बी टी क्यु समुदाय की आवश्यकताओं का संघीय स्तर पर मूल्यांकन करना और उनकी राय प्राप्त करना था। इस आयोग की अध्यक्षता कैबिनेट सचिव द्वारा की गई, और इसमें गृह मंत्रालय, सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, विधि और न्याय मंत्रालय, महिला और बाल विकास मंत्रालय, तथा स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के सचिव शामिल थे।

बीजेपी/एनडीए की सत्तारूढ़ सरकार ने समलैंगिक संबंधों की मान्यता पर 'मानवीय चिंताओं' को हिंदुत्व के संदर्भ में संबोधित करने की नीति अपनाई, जबकि किसी भी प्रकार के नागरिक संघों (civil unions) का विरोध किया । इसके विपरीत, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी ने अपने घोषणापत्र में वादा किया कि 2024 के आम चुनाव में लोकसभा में बहुमत प्राप्त करने पर, समलैंगिक नागरिक संघों को लागू करने के लिए एक चर्चा आयोजित की जाएगी। सरकारी सूत्रों ने यह भी बताया कि भारत में समलैंगिक संबंधों की मान्यता के लिए सभी धार्मिक समूहों का समर्थन आवश्यक होगा।

28 अगस्त 2024 को, भारत के वित्त मंत्रालय ने एक परामर्श जारी किया जिसमें स्पष्ट किया गया कि LGBTQ समुदाय के व्यक्तियों को संयुक्त बैंक खाता खोलने या अपने साथियों को लाभार्थी नामित करने में कोई प्रतिबंध नहीं है।

वर्तमान में, भारत में समलैंगिक विवाह को कानूनी मान्यता प्राप्त नहीं है, लेकिन इस संघर्ष ने अधिकारों और समानता के लिए जारी आंदोलन को नई ऊर्जा प्रदान की है । यह घटनाक्रम इस बात को रेखांकित करता है कि LGBTQIA+ समुदाय के अधिकारों के लिए जारी प्रयास भारतीय समाज में प्रगतिशील परिवर्तन और न्याय के लिए एक मजबूत आधार बना रहे हैं।

1.4 क्वीर के प्रकार

क्वीर समुदाय या क्वीर स्टडीज़ एक अत्यधिक गतिशील क्षेत्र है जो लगभग हर रोज़ विस्तार हो रहा है । समलैंगिकता से तात्पर्य है किसी भी समान लिंग के व्यक्ति के साथ यौन आकर्षण । समलैंगिकों को आम बोलचाल की भाषा में एलजीबीटी (LGBT) यानी लेस्बिमयन, गे, बाईसेक्सुअल और ट्रांसजेंडर कहते हैं । वहीं कई और दूसरे वर्गों को जोड़कर इसे क्वीर (Queer) समुदाय का नाम दिया गया है । इसलिए इसे एल जी बी टी क्यु + भी कहा जाता है ।

‘An umbrella term or identity taken on by some LGBTQIA+ people to describe a sexual or gender identity that falls outside societal norms. This has a history of being used as a slur. Although it has been reclaimed by many LGBTQIA+ people, not everyone is comfortable using it’[16]

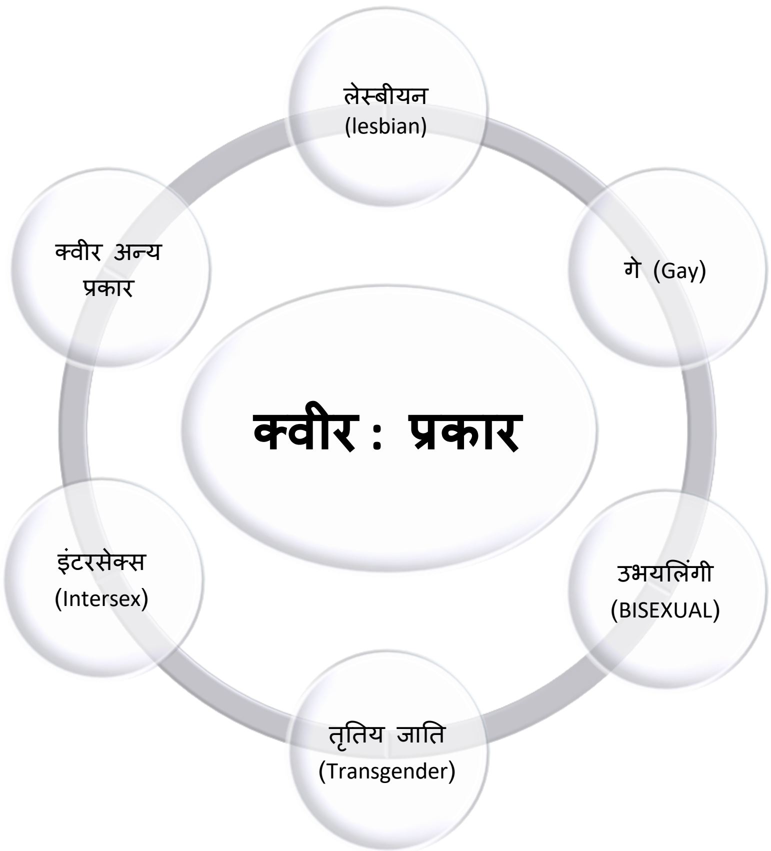

चित्र 3., क्वीर : प्रकार

क्वीर के प्रकार लैंगिक और यौनिक पहचान की विविधता को दर्शाते हैं। यह पारंपरिक लिंग और यौनिकता के मानदंडों से परे विभिन्न व्यक्तित्वों और अभिविन्यास को परिभाषित करता है। इन प्रकारों में लैंगिक पहचान, यौनिकता, और यौन अभिविन्यास जैसे पहलुओं को शामिल किया जाता है।

1.4.1 समलैंगिक (स्त्री)/ लेस्बियन (Lesbian)

जब एक स्त्री प्रेम या विवाह में पुरुष के बजाय किसी अन्य स्त्री के प्रति ही आकर्षित होती है तो उसे लेस्बियन कहा जाता है ।

1.4.2 समलैंगिक (पुरुष) / गे (Gay)

जब एक पुरुष प्रेम या विवाह में किसी स्त्री के बजाय पुरुष के प्रति ही आकर्षित होता है तो उसे गे कहा जाता है। 'Gay' शब्द को 'Heterosexual' को छोड़कर अन्य लैंगिक पहचान के लिए एक अम्ब्रेला term के रुप में प्रयोग करते हैं ।

1.4.3 उभयलिंगी / Bisexual

जब कोई पुरुष स्त्री तथा पुरुष दोनों के साथ लैंगिक संबंध रखते हैं तो उन्हें उभयलिंगी कहा जाता है । ये महिलाऐं भी हो सकती हैं । ये लिंग किसी भी लिंग के प्रति आकर्षित हो सकते हैं। ऐसे संबध को Bisexual कहते हैं ।

1.4.4 तृतीय जाति / Transgender

यहाँ वे लोग आते हैं जिनका व्यवहार उनके जन्म के समय के लिंग के विपरीत होता है। मतलब है कि कोई व्यक्ति जन्म के समय पुरुष था लेकिन समय के साथ उसका व्यवहार महिलाओं जैसा होने लगता है या जन्म के समय लड़की थी लेकिन व्यवहार लड़कों वाले हैं तो उन्हें Transgender कहा जाता है।

1.4.5 इंटरसेक्स / Intersex

जन्म के समय अगर किसी का लिंग स्पष्ट नहीं होते है तो ऐसे लोगों को इंटरसेक्स कहा जाता है। ऐसे लोगों का लिंग डॉक्टर द्वारा ही निधार्रीत किया जाता है। डॉक्टर ही बताते है कि ऐसे लोगों को स्त्री माना जाए या फिर पुरुष ।

1.4.6 **क्वीर / Queer/ Questioning**

यह दुविधा में फँसे लोंगों की श्रेणी है । यह लोग जो अपने बारे में तय नहीं कर पाते हैं कि उनका आकर्षण पुरुष की ओर है या फिर स्त्री, उनके अंतर स्त्री वाले गुण है या फिर पुरुष वाले । हमेशा उधेडबुन में खोए रहते हैं । ऐसे लोगों के लिए **'क्वीर'** का इस्तेमाल होता है ।

LGBTQIA+ में अंत में प्लस चिह्न यह दर्शाने के लिए शामिल किया गया है कि ऐसी कई अन्य लैंगिक और यौन पहचानें भी हैं, जो इस संक्षिप्त रूप में सीधे तौर पर उल्लेखित नहीं हैं, लेकिन वे क्वीर समुदाय के दायरे में आती हैं । वे निम्न है-

1.4.7 अन्य प्रकार

- **अलिंगी / Asexuality**

व्यक्ति को किसी भी प्रकार के यौन इच्छा नहीं होना। यह यौन आकर्षण की कमी से परिभाषित होता है। सेक्स करने की इच्छा न होना, सेक्स में दिलचस्पी न लेना, सेक्स ड्राइव का अनुभव न करना आदि अलैंगिक अनुभवों में शामिल होते हैं।

- **पैनसेक्सुअल / Pansexual**

इसमें व्यक्ति सेक्सहोता। यह किसी के लिंग या लिंग पहचान के संबध में सीमित नहीं , भी प्रति आकर्षित होते हैं।

- **पॉलीसेक्सुअल / Polysexual**

यह कई लोगों या लिंगों की तरफ आकर्षित होते है यह विभिन्न प्रकार का काल्पनित कामुकता को शामिल या चित्रित करते हैं।

- **डेमीसेक्सुअल / Demisexual**

ऐसे लोग किसी के भी साथ तब तक यौन संबध नही बनाते जब तक वह किसी के साथ भावनात्मक संबध नहीं बना लेता है ।

- **सपोसेक्सुअल / Sapiosexual**

यह लोग किसी लिंग की और यौन रूप से आकर्षित होने की बजाए किसी भी व्यक्ति की बुद्धिमता की ओर आकर्षित होते हैं।

- **ग्रेसेक्सुअल / Graysexual**

यह हमेशा यौन आकर्षित नहीं होते। यही कभी कभार ही थोड़ा बहुत ही यौन सुख का अनुभव करते हैं।

- **एंड्रोजेन सेक्सुअल / Androgynsexual**

यह पुरुष और महिला दोनों ही लिंग के प्रति आकर्षित होते हैं। बेशर्ते ये लोग स्त्री पुरुष दोनों तरह के गुणों से युक्त हो।

- **एंड्रोसेक्सुअल / Androsexual**

यह बहुत ही मर्दाना पुरुषों से आकर्षित होते है और कभी कभी उन महिलाओं से आकर्षित होते है जो जिनमें कोई मर्दाना विशेषताएँ हो।

- **गाइनोसेक्सुअल/ Gynosexual**

यह व्यक्ति उन महिलाओं की ओर आकर्षित होते है जो बेहद स्त्रैण होती है तथा उन पुरुषों की ओर भी आकर्षित होते है जिन्में स्त्रैण भाव हो ।

- **पोमोसेक्सुअल / Pomosexual**

यह लोग समाज द्वारा किसी भी यौन अभिविन्याय की पहचान को नहीं मानते है।

- **स्कीलोसेक्सुअल / Skoliosexual**

यह मुख्य रूप से लैंगिक प्रेमपूर्ण या सौंदर्यवादी रूप से जेंडर या ट्रान्स जेंडर या वह लोग जिनका कोई लिंग निर्धारित ना हो उनकी ओर आकर्षित होता है ।

- **ऑटोसेक्सुअल / Autosexual**

जब कोई व्यक्ति खुद से या अपनी आप से आकर्षित हो ।

क्वीर समुदाय के प्रकार मानव अनुभव की विविधता और गहराई को उजागर करते हैं। ये पहचानें केवल यौनिकता तक सीमित नहीं हैं, बल्कि लिंग अभिव्यक्ति, आत्म-स्वीकृति, और सामाजिक संरचनाओं को चुनौती देने की जटिल परतों को समाहित करती हैं।

1.5 क्वीर : धर्म संबंधी मान्यताएँ

भारत जैसे धार्मिक देश में परंपरा, कला एवं अनुष्ठानों का अहमियत बडी मात्रा में भारत के विविध धर्मे के अंतर देखा जा सकता है । भारत जैसे धार्मिक देश के लोगों की मानना है कि 'समलैंगिकता' जो है पाश्चात्य प्रभाव के कारण भारत में फैली है । हमारे सांस्कृतिक एवं धार्मिक परंपराओं की ओर गौर से देखा जाए तो यह साफ पता चलता है कि समलैंगिकता की उपस्थिति विश्व के प्रत्येक धर्म में जिस प्रकार देखी जाती है, उसी प्रकार यह भारतीय समाज और संस्कृति में भी गहराई से अंतर्निहित है ।

1.5.1 हिन्दु धर्म

हिंदू धर्म, अपनी प्राचीनता और विविधता के कारण, मानव अस्तित्व की बहुआयामीता को समाहित करता है । इस धर्म में लिंग और यौन विविधताओं को लेकर अनेक दृष्टांत और संदर्भ मिलते हैं, जो यह दर्शाते हैं कि समलैंगिकता और अन्य गैर-पारंपरिक लैंगिक पहचानों को कभी भी पूर्ण रूप से अस्वीकार नहीं किया गया । धार्मिक ग्रंथों, लोक कथाओं, और पौराणिक कथाओं में ऐसी कहानियाँ और चरित्र मौजूद हैं, जो लिंग और यौनिकता के परंपरागत ढाँचों से परे हैं ।

हिन्दु धर्मों में यौनपरिवर्तन या लिंग संबधित विषय की चर्चा कोई नई बात नहीं है। पौराणिक पवित्र ग्रंन्थ जिसमें निम्न क्वीर कथाएँ निहित है जैसे-

1.5.1.1 महाभारत

महाभारत का अद्‌वितीय पात्र **शिखंडी**, राजा द्रुपद और उनकी रानी के संतानहीन होने की समस्या के कारण जन्मा । रानी ने भगवान शंकर की कठोर तपस्या की, जिसके परिणामस्वरूप शिव ने वरदान दिया, "शीघ्र ही रानी के गर्भ से एक कन्या का जन्म होगा, जो बाद में पुरुष का रूप धारण करेगी[17]" ।

रानी ने एक पुत्री को जन्म दिया, लेकिन राजा द्रुपद ने इसे छुपाते हुए पूरे राज्य में घोषणा कर दी कि उनके घर पुत्र ने जन्म लिया है । पुत्री का नाम शिखंडी रखा गया। समय बीतने के साथ जब शिखंडी यौवनावस्था में पहुँचा, तो पुत्र के रूप में उसकी पहचान बनाए रखना मुश्किल हो गया । शिव के वरदान पर पूर्ण विश्वास रखते हुए राजा ने शिखंडी के लिए एक कन्या की खोज शुरू की और उसका विवाह करा दिया ।

विवाह के बाद, शिखंडी की पत्नी को यह पता चल गया कि 'शिखण्डी पुरुष रूप में छिपी हुई स्त्री है[18]"। उसने यह बात अपनी सखियों को बताया, और यह खबर पूरे राज्य में फैल गई। इस अपमान और दुविधा को सहन न कर पाने के कारण, शिखंडी ने घर छोड़ दिया और वन में जाकर शिखंडीनी के रूप में जीवन बिताने लगा ।

वन में उसकी भेंट यक्ष कुबेर के एक सेवक सूत्ताकर्ण से हुई । सूत्ताकर्ण ने शिखंडी की कहानी सुनने के बाद कहा कि वह एक निश्चित समय के लिए उसे पुरुष बना सकता है । इसके बदले, यक्ष ने स्वयं स्त्री रूप धारण कर लिया । जब यक्ष कुबेर वन में आए और अपने सेवक सूत्ताकर्ण को स्त्री रूप में पाया, तो वे क्रोधित हो गए। सूत्ताकर्ण ने शिखंडी से अदला-बदली की बात कुबेर को बताया । कुबेर ने सूत्ताकर्ण को श्राप दिया, "तू सदा स्त्री बनकर इस पृथ्वी में रह, और शिखंडी सदा पुरुष ही बनकर जीवन बिताएगा । मूर्ख, तेरे अपराध का यही उचित दंड है[19]"। इस प्रकार शिखंडी स्थायी रूप से पुरुष बन गया ।

जब कुरुक्षेत्र का युद्ध अपने चरम पर था, नौ दिनों तक पांडव और कौरव सेनाएँ संघर्ष करती रहीं, लेकिन कोई निर्णायक परिणाम नहीं निकला, तब अर्जुन की व्याकुलता देखकर कृष्ण ने कहा कि कौरवों को हराने के लिए एक चाल आवश्यक है । उन्होंने सुझाव दिया कि ऐसा व्यक्ति कौरवों के समक्ष लाया जाए जिसके सामने भीष्म हथियार न उठाएँ ।

शिखंडी को भीष्म के सामने प्रस्तुत किया गया। भीष्म ने कहा कि वे शिखंडी पर हथियार नहीं उठाएँगे, क्योंकि उसका जन्म स्त्री रूप में हुआ था। इस अवसर का लाभ उठाते हुए अर्जुन ने भीष्म पर बाणों की वर्षा कर दी। भीष्म घायल होकर धरती पर गिर पड़े । इस तरह पांडवों ने महाभारत का युद्ध जीत लिया। महाभारत के इस निर्णायक अध्याय में शिखंडी का किरदार अत्यंत महत्वपूर्ण और निर्णायक रहा है ।

भीष्म, महाभारत, भारतीय इतिहास और पौराणिक कथाओं का महाकाव्य, उन व्यक्तित्वों और घटनाओं का समागम है, जो नैतिकता, कर्तव्य और त्याग की गहरी छाप छोड़ते हैं। इन्हीं में से एक है भीष्म का जीवन, जो न केवल हस्तिनापुर के उत्तराधिकारी के रूप में बल्कि अपने पिता और राज्य के प्रति अटूट समर्पण के प्रतीक के रूप में याद किया जाता है। हस्तिनापुर के राजा शांतनु को नदी की अप्सरा गंगा से प्रेम हो गया। राजा ने गंगा से विवाह की अनुमति मांगी, और गंगा ने यह शर्त रखी कि राजा उनके किसी भी कार्य पर कभी सवाल नहीं करेंगे। प्रेम में अंधे राजा शांतनु ने इस शर्त को स्वीकार कर लिया। विवाह के बाद, गंगा ने अपने पहले सात पुत्रों को जन्म देते ही नदी में डुबो दिया । राजा अपने वचन के कारण मूकदर्शक बने रहे। लेकिन जब गंगा आठवें पुत्र को डुबाने का प्रयास कर रही थीं, तो राजा अपने वचन को तोड़ते हुए उसे रोकने के लिए आगे आए। इस घटना के बाद गंगा ने शिशु को जीवित तो छोड़ दिया, लेकिन हमेशा के लिए राजा को त्याग दिया।

आठवें पुत्र का नाम देवव्रत रखा गया, जो बड़े होकर एक अद्‌वितीय धनुर्धर और कुशल युवराज बने। वे हस्तिनापुर के सबसे योग्य और प्रिय उत्तराधिकारी माने जाते थे। समय बीतने

के साथ, राजा शांतनु को मछुआरे की पुत्री सत्यवती से प्रेम हो गया। सत्यवती ने राजा से यह वादा करने की माँग की कि उनके पुत्र ही हस्तिनापुर के सिंहासन के उत्तराधिकारी बनेंगे। यह शर्त राजा के लिए दुविधा का कारण बनी । जब देवव्रत को इस स्थिति का पता चला, तो उन्होंने हस्तिनापुर के भविष्य को सुरक्षित रखने के लिए स्वयं अपने अधिकारों का त्याग करने का निर्णय लिया ।

देवव्रत ने प्रतिज्ञा ली, "मैं किसी महिला को अपने बिस्तर पर नहीं ले जाऊँगा और कभी भी बच्चों का पिता नहीं बनूँगा"[20] । उनके इस त्याग और पिता के प्रति प्रेम ने देवताओं को इतना प्रभावित किया कि उन्होंने उन्हें भीष्म की उपाधि दी । अपने पिता और राज्य के प्रति यह समर्पण भीष्म को महाभारत के सबसे आदर्श और त्यागमूर्ति पात्रों में से एक बनाता है ।

'भीष्म की इस कहानी में उनके जीवन के ब्रह्मचर्य और अटूट कर्तव्यनिष्ठा को दर्शाने के साथ-साथ अलिंगी होने की झलक भी दिखाई देती है'[21] । उनका त्याग, नैतिकता और निष्ठा का प्रतीक है, जो आज भी एक प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है ।

महाभारत में **चंद्रवंश के राजाओं** की अनेक रोचक कथाएँ पाई जाती हैं । इनमें से एक कथा के अनुसार, ऋषि बृहस्पति की पत्नी तारा और चंद्रमा के बीच प्रेम संबंध हो गया । जब यह गैर संबंध उजागर हुआ, तो बृहस्पति ने श्राप दिया कि इस संबंध से जन्मा बालक नपुंसक होगा । इस प्रकार, बुद्ध ग्रह का जन्म हुआ, जो न तो पूर्णतः स्त्री थे और न ही पुरुष । बुद्ध ग्रह ने अपनी माता तारा से पूछा कि उनकी शादी किससे होगी—स्त्री से या पुरुष से । तारा ने उत्तर दिया कि उनके लिए कोई न कोई उपयुक्त साथी अवश्य मिलेगा । बुद्ध ग्रह का विवाह सुद्युम्म से हुआ ।

महाभारत में तृतीय प्रकृति से संबंधित एक प्रसंग है, जिसमें 'सुद्युम्म' से संबंधित कथा का वर्णन किया गया है । कथा में बताया गया है कि एक बार वह वन में भटकते हुए शिव और शक्ति के संभोग स्थल से गुजरे, जहाँ जंगल से गुजरने वाला हर व्यक्ति स्त्री रूप धारण कर

लेता था । इसी प्रभाव से सुद्धुम्‍न भी स्त्री बन गए और इला कहलाए । शिवजी से प्रार्थना करने पर उन्हें वरदान मिला कि वे कृष्ण पक्ष में स्त्री और शुक्ल पक्ष में पुरुष बनेंगे । माना जाता है कि, बुद्ध और इला के संबंध से चंद्रवंश की स्थापना हुई । इस प्रकार, चंद्रवंश की उत्पत्ति तृतीय प्रकृति के अनूठे अनुभवों से जुड़ी है ।

राजा भंगस्वाना की कथा महाभारत के आदिपर्व में वर्णित है और यह भारतीय पौराणिक कथाओं में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है । राजा भंगस्वाना की कहानी को लैंगिक पहचान और लिंग परिवर्तन के संदर्भ में भी देखा जाता है। **राजा भंगस्वाना** ने 100 पुत्रों की प्राप्ति के लिए यज्ञ किया । यद्यपि यज्ञ सफल हुआ, परंतु उन्होंने इंद्र को यज्ञ में कुछ अर्पित नहीं किया, जिससे इंद्र क्रोधित हो गए और भंगस्वाना को स्त्री बन जाने का श्राप दे दिया। स्त्री रूप में रहते हुए उन्होंने पुनः 100 संतानों को जन्म दिया । उनके पहले के पुत्र उन्हें "पिता" और बाद में जन्मे संतानों ने 'माता' के रूप में संबोधित किया । उनसे पूछा गया कि पुरुष या स्त्री बनने में अधिक सुखद अनुभव किसका था? उन्होंने उत्तर दिया कि स्त्री बनना अधिक आनंदमय था क्योंकि स्त्री को 'प्रियतमा' और 'माता' दोनों का अद्भुत अनुभव प्राप्त होता है ।

अरावन की कथा : महाभारत युद्ध से जुड़ी एक कथा के अनुसार, पांडवों की विजय के लिए एक बत्तीस गुणों वाले पुरुष की नरबलि आवश्यक थी । यह गुण अर्जुन, श्रीकृष्ण और अरावन में थे, लेकिन युद्ध के लिए अर्जुन और श्रीकृष्ण का जीवित रहना अनिवार्य था । अरावन, जो अर्जुन और नागकन्या उलूपी के पुत्र थे, बलि चढ़ने के लिए सहमत हो गए, परंतु उन्होंने एक अंतिम इच्छा व्यक्त की कि वे बलि चढ़ने से पहले विवाह करना चाहते थे, ताकि उनकी विधवा उनके लिए विलाप कर सके । अरावन की इस शर्त को कोई स्त्री स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हुई । तब श्रीकृष्ण ने मोहिनी का रूप धारण कर अरावन से विवाह किया । मोहिनी ने अरावन के साथ एक रात बिताई और बलि के बाद उनकी विधवा के रूप में विलाप किया। तमिलनाडु में अरावनियों की मेला इसी कथा की स्मृति में मनाया जाता है । अरावनियों का

विश्वास है कि वे उस दिन श्रीकृष्ण के मोहिनी रूप को अनुभव करते हैं और स्त्रीत्व को अपनाते हैं ।

1.5.1.2 रामायण

हिजडों से जुड़ी एक प्राचीन कथा भारतीय महाकाव्य रामायण में विद्‌यमान है, जो उनकी भक्ति, समर्पण और समाज में उनकी स्वीकृति की ओर संकेत करती है । कथा के अनुसार, जब भगवान राम वनवास समाप्त कर अयोध्या लौट रहे थे, तब उन्होंने सरयू नदी के तट पर कुछ किन्नरों को बैठे देखा । उनके वहाँ होने का कारण पूछने पर किन्नरों ने अपनी कहानी सुनाई ।

उन्होंने बताया कि जब रामजी वनवास जा रहे थे, तब अयोध्या के सभी लोग उनके पीछे चल दिए थे। रामजी ने सभी पुरुषों और स्त्रियों को अयोध्या लौटने का आदेश दिया था, परंतु उन्होंने तृतीय प्रकृति के बारे में कुछ नहीं कहा। स्वयं को न पूर्ण रूप से पुरुष मानने वाले और न ही स्त्री, किन्नर रामजी के आदेश से असमंजस में पड़ गए। वे निर्णय लेने में असमर्थ थे और रामजी की वापसी तक वहीं सरयू नदी के तट पर प्रतीक्षा करते रहे, इस आशा में कि प्रभु लौटकर उन्हें साथ ले जाएंगे ।

इस उत्तर को सुनकर रामजी ने उन्हें सांत्वना दी और कहा कि जब तक वे किन्नरों को सम्मानपूर्वक अयोध्या नहीं ले जाएंगे, तब तक रामराज्य की स्थापना अधूरी रहेगी । रामराज्य की परिकल्पना केवल पुरुष और स्त्रियों तक सीमित नहीं थी, बल्कि हर लिंग और हर वर्ग को समान अधिकार और सम्मान प्रदान करने पर आधारित थी ।

इस कथा की झलक तुलसीदास द्‌वारा रचित रामचरितमानस में भी मिलती है । इसमें भगवान राम कहते हैं:

"पुरुष नपुंसक नारि वा जीव चराचर कोइ।

सर्ब भाव भज कपट तजि मोहि परम प्रिय सोइ॥"[22]

इसका अर्थ है कि चाहे वह पुरुष हो, स्त्री हो, नपुंसक हो, या फिर कोई अन्य जीव—यदि वह कपट छोड़कर पूरी श्रद्धा और समर्पण के साथ भगवान का भजन करता है, तो वह प्रभु को अत्यंत प्रिय है।

रामायण में सूर्यवंश से संबंधित कथाओं में वानरों के राजा ऋक्षराज और उनके वंश का उल्लेख मिलता है । कहा जाता है कि ऋक्षराज एक दिन जल में गिरकर स्त्री बन गए । इंद्र और सूर्य देव ने उनके स्त्री रूप से संतानें उत्पन्न कीं, जो क्रमशः बाली और सुग्रीव थे।

एक अन्य कथा में, सूर्य देव के सारथी अरुण ने स्वर्ग में अप्सराओं का नृत्य देखने के लिए स्त्री रूप धारण किया और आरुणि कहलाए। इंद्र और सूर्य देव, दोनों आरुणि के स्त्री रूप से आकर्षित हुए । इंद्र के संबंध से बाली और सूर्य देव के संबंध से सुग्रीव का जन्म हुआ। इस प्रकार महाभारत और रामायण दोनों में हमें तृतीय प्रकृति की कथाएँ मिलती हैं ।

1.5.2 बौद्ध धर्म

बौद्ध ग्रंथ 'विनय पिटक' में भिक्षुओं को स्त्रियों और यौन संबंधों से दूर रहने की शिक्षा दी गई है । धम्मपद में सोरय्या नामक पुरुष के स्त्री में परिवर्तित होने की कथा मिलती है। त्रिपिटक में पंडक नामक समलैंगिक व्यक्तियों का उल्लेख मिलता है, जो अन्य पुरुषों के प्रति आकर्षण रखते थे। बौद्ध धर्म समलैंगिकता को मानवीय स्वभाव के रूप में स्वीकार करता है। जापान के बौद्ध विहारों में भी समलैंगिकता को स्वीकृति दी गई थी।

1.5.3 जैन धर्म

जैन धर्म के अनुसार, तृतीय प्रकृति का होना स्वाभाविक है। जैन ग्रंथों में यह विचार मिलता है कि "यदि कोई व्यक्ति गे या लेस्बियन है, तो उसे अपने स्वभाव के लिए सम्मानित किया जाना चाहिए। जैन धर्म मानव इच्छाओं और कामनाओं से ऊपर उठने की शिक्षा देता है"[23]।

1.5.4 सिख धर्म

सिख धर्म में गुरु ग्रंथ साहिब में समलैंगिकता का उल्लेख नहीं है, लेकिन गुरु नानक की एक कथा में ट्रान्स जेंडर व्यक्ति का सम्मान करने का उल्लेख मिलता है। समानता और प्रेम के सिद्धांत के आधार पर तृतीय प्रकृति को स्वीकार्यता दी गई है।

भारतीय धर्म और साहित्य में ट्रान्स जेंडर और समलैंगिकता को विभिन्न रूपों में दर्शाया गया है । महाभारत, रामायण और अन्य धार्मिक ग्रंथ इन विषयों पर गहन दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं जिससे यह स्पष्ट होता है कि इन कथाओं के माध्यम से समाज ने विभिन्न यौन और लिंग पहचानों को प्राचीन काल से ही स्वीकृति और सम्मान देने का प्रयास किया है ।

1.6 हिन्दी साहित्य में क्वीर विमर्श

'विमर्श' शाब्द को अंग्रेजी में 'DISCOURSE' कहा जाता है, उसे 'हिंदी में किसी विषय का गहन अध्ययन करना', 'चिंतन-मनन करना', 'तर्क-विर्तक करना' तथा उस से संबंधित विषय के विभिन्न पहलुओं को जानना और सभी पक्षों की तटस्थता से पड़ताल करना' ही विमर्श है। हिंदी कोश में विमर्श का अर्थ - "सोच-विचार कर तथ्य या वास्तविकता का पता लगाना, किसी बात या विषय पर कुछ सोचना, समझना, विचार करना, गुण-दोष आदि की आलोचना या मीमांसा करना, जाँचना और परखना, किसी से परामर्श या सलाह करना"[24]।

साहित्य के सन्दर्भ में अक्सर कहा जाता है कि इक्कीसवीं सदी विमर्शों की सदी (Century of Discourses) है । इस सदी के प्रमुख विमर्श हैं स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, अल्पसंख्यक विमर्श, मुस्लिम विमर्श, दिव्यांग विमर्श, बाल विमर्श, वृद्ध विमर्श, पारिस्थितिक, किन्नर विमर्श इनमें कई विमर्शों का आरंभ इक्कीसवीं सदी के पहले हो चुका था। आज क्वीर विमर्श गंभीर चर्चा का विषय है । क्वीर विमर्श को ट्रांसजेंडर विमर्श, हिजड़ा विमर्श, तृतीय लिंगी विमर्श, उभयलिंगी विमर्श, किन्नर विमर्श आदि के नाम से जाना जाता हैं । यह साहित्य एक

ऐसा साहित्य है कि जिसे 'क्वीर विमर्श' के साथ जोडकर उसमें क्वीर की मात्र वेदना को ही नहीं अपितु उसके प्रति संवेदना को भी उजागर किया गया है ।

भारतीय समाज में क्वीर पहचान को लंबे समय तक अनैतिक और अप्राकृतिक मानकर अस्वीकार किया गया था । उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में, हिन्दी साहित्य में स्त्री रचनाओं का उदय हुआ, जिसने सामाजिक विषयों को नए दृष्टिकोण के साथ प्रस्तुत किया । इन रचनाओं में प्रेम विवाह से लेकर समलैंगिक संबंधों तक के मुद्दों को साहसपूर्वक उठाया गया । लेखिकाओं ने अपने लेखन के माध्यम से जेंडर समानता और सामाजिक चेतना की माँग करते हुए इन विषयों को समाज तक पहुँचाने का प्रयास किया ।

हिन्दी साहित्य में समलैंगिक विमर्श का बीजारोपण सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला ने अपने उपन्यास 'कुल्ली भाट' (1938) में किया । इस उपन्यास का केंद्रीय पात्र कुल्ली, एक समलैंगिक व्यक्ति, अपने जीवन के संघर्षों के माध्यम से समाज के समलैंगिक व्यक्तियों के कष्ट और समस्याओं को उजागर करता है । निराला का यह लेखन समलैंगिकता के प्रति संवेदनशीलता और समझ का परिचय देता है ।

1947 में प्रकाशित उपन्यास 'एकाकिनी' ने लेस्बियन संबंधों पर चर्चा की और इसे साहित्यिक विमर्श का हिस्सा बनाया । 1966 में, राजकमल चौधरी के उपन्यास 'मछली मरी हुई' में स्त्री समलैंगिकता की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए समाज में जेंडर और यौनिकता के पारंपरिक ढाँचों को चुनौती दी । इन रचनाओं ने हिन्दी साहित्य को केवल समृद्ध ही नहीं किया, बल्कि जेंडर और यौनिकता पर चर्चा के द्वार भी खोल दिया ।

1.6.1 हिन्दी उपन्यास साहित्य में क्वीर विमर्श

21 वीं सदी में क्वीर विमर्श' अथवा 'एल जी बी टी समुदाय' को साहित्य के केंद्र में लाने का काफी प्रयास किया जा रहा है । इस समुदाय की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और

मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि को साहित्य के माध्यम से समाज को रू-ब-रू करवाने में उपन्यासकार और कहानीकारों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है । थर्ड जेंडर पर आधारित नीरजा माधव 'यमदीप', महेन्द्र भीष्म 'किन्नर - कथा', 'मैं पायल', प्रदीप सौरभ 'तीसरी ताली', निर्मला भुराड़िया 'गुलाममंडी', अनुसूया त्यागी 'मैं भी औरत हूँ' सुभाष अखिल' दरमियाना', चित्रामुद्‌गल 'पोस्ट बॉक्स नं. 203 ', राजेश मल्लिक 'आधा आदमी', डॉ विमला मल्होत्रा 'किन्नर मुनिया मौसी', भंगवत अनमोल 'जिंदगी 50-50', गिरिजाभारती 'अस्तित्व', हरभजनसिंह मेहरोत्रा 'ऐ जिंदगी तुझे सलाम', भुवनेश्वर उपाध्याय 'हॉफमैन', नरेन्द्र कोहली 'शिखण्डी', डॉ मोनिका शर्मा 'अस्तित्व की तलाश में सिमरन', रेनू बहल 'मेरे होने में क्या बुराई', डॉ लता अग्रवाल 'मंगलमुखी', शरदसिंह 'शिखण्डी स्त्री देह से परे', ड्रॉ मुक्ति शर्मा 'श्रापित किन्नर', अर्चना कोचर 'किन्नर कथा-एक अंतहीन सफर' इत्यादि उपन्यासों में हिजड़ों द्वारा भुगती गई पारिवारिक समस्याएँ, परिवार से बिछुड़ने की पीड़ा, अकेलापन, पारिवारिक कलह, शिक्षा से संबंधित कठिनाइयाँ और अत्याचार जैसी अनेक समस्याओं का वर्णन किया गया है।

उपन्यासों में भी तीव्र गति से समलैंगिक संबधों का चित्रण भी मिलता है । उपन्यास 'कुमारियाँ' में समान लिंग के प्रति आकर्षण होने की व्यथा को अभिव्यक्त किया है । 'श्मशान चम्पा' उपन्यास में शिवानी ने पुरुष वर्ग के प्रति समलैंगिक यौनाचार को दिखाने का प्रयास किया है । समलैंगिक एवं थर्ड जेंडर के समस्याएँ और संवेदनाओं तथा संघर्ष को पूरी तरह जानना असंभव ही है, क्योंकि इस समुदाय के बारे में शिक्षा की कमी के कारण कई प्रकार की रूढ़ मान्यताएं समाज में हैं, जैसे समलैंगिक होना विकल्प है, मानसिक बीमारी है । इन रूढ़िवादी मान्यताओं और परम्पराओं के कारण ये लोग रीति-रिवाज, आचार-विचार, रहन-सहन को मुख्यधारा के लोगों के साथ साझा करने से डरते हैं ।

1.6.2 हिन्दी कहानी साहित्य में क्वीर विमर्श

हिंदी साहित्य में क्वीर आधारित कहानियों की संख्या वर्तमान समय तक लगभग 150 तक पहुंच चुकी है। रवीन्द्रनाथ टैगोर की 'गिन्नी' कहानी, जो 1891 में प्रकाशित हुई, में 'आशू' को समलैंगिक पात्र के रूप में प्रस्तुत किया गया है। 20वीं शताब्दी के पहले शिवप्रसाद सिंह की कृतियाँ 'बिंदा महाराज' और 'बहाव वृत्ति' किन्नर कहानियों की शुरुआत मानी जाती हैं। इसके बाद, 21वीं सदी तक आते-आते तृतीयलिंगी समुदाय पर केंद्रित काफी कहानियाँ लिखी गई हैं।

थर्ड जेंडर पर आधारित प्रथम मौलिक कहानी संग्रह लिखकर 'तृतीयलिंगी विमर्श' को आगे बढ़ाने का सहयोग 'राकेश शंकर भारती' ने किया है । उन्होंने 'जिंदगी के उस पार' कहानी संग्रह लिखा जिसमें 11 कहानियाँ संग्रहीत किया गया है । इन कहानियाँ क्रमशः इस प्रकार है - 1.मेरे बालमम चले गये 2. मेरी बेटी 3. दयाबाई 4. रक्तदान 5. रामवृक्ष दादा की याद में 6. सौतन 8. फ्रेंड रिक्वेस्ट 9. ट्रांसजेंडर 9. बधिया 10. तीन रंडियाँ 11. इस जिंदगी के उस पार। ये कहानियाँ हिजडाओं के दर्द के साथ प्रेम, परिवार, समाज और आर्थिक विषयों को ध्यान में रखते हुए लिखी गयी है ।

डॉ.एम.फीरोज खान द्वारा थर्डजेंडर पर आधारित प्रथम संपादित कहानी संग्रह है 'थर्डजेंडर : हिंदी कहानियाँ'। इसमें लगभग 15 कहानी और दो लघु कहानियाँ प्रकाशित है । 'शिवप्रसाद सिंह' की 'बिंदा महाराज' 21वीं सदी की प्रथम हिजडा कहानी मानी जाती है । यहाँ से 'तृतीयलिंगी विमर्श' को चर्चा का विषय बनाने की शुरुआत हुई । 'राही मासूम रज़ा' ने 'खलीक अहमद बुआ' कहानी भी 'बिंदा महाराज' की तरह चेतना और चरित्र प्रधान तथा अपने प्रेम में सर्वस्व न्यौछावर करने वाली बहुत महत्त्वपूर्ण कहानी है । डॉ.एम.फीरोज खान द्वारा रचित द्वितीय कहानी संग्रह है- 'हम भी इंसान हैं' इसमें 15 हिंदी कहानियाँ और कुछ पंजाबी, बंगला और उर्दू भाषाओं की अनुवादित कहानियाँ भी संकलित है । कमल कुमार की 'कुकुज नैस्ट', डॉ सूरज बड़त्या की 'कबीरन', सोमाभारती की 'गली आगे मुड़ती है', 'डॉ. लवलेश दत्त' की 'नवाब', 'डॉ. विमलेश शर्मा' की 'मन मरीचिका', 'जवाहरलाल कौल व्यग्र' की 'ज्योति सूना नयन', 'कैस जौनपुरी' की 'एक

किन्नर की लव स्टोरी', 'बबिता भंडारी' की 'समर से सुरमई', 'लव कुमार 'लव की 'अंधेरे की परतें','डॉ. रश्मि दीक्षित' की नियति, 'सफिया सिद्दकी' की 'अपना दर्द', 'मीना पाठक' का 'भूमिजा', 'विनोद कुमार दवे' की 'पद्मश्री थर्डजेंडर', 'डॉ. ललित सिंह राजपुरोहित' की 'ट्रांसजेंडर' इत्यादि कहानियों का संकलन इस संग्रह में किया गया । इन कहानियों में से डॉ. सूरज बड़त्या की 'कबीरन' और 'डॉ. लवलेश दत्त' की 'नवाब' कहानियों में पात्र बहुत ही सुलझे हुए हैं, ये कहानियाँ समाज में जागरूकता फैलाने में शतप्रतिशत खरी उतरती है । संझा और कबीरन कहानियों के पाठकों में संवेदनाओं को उभारना ही लेखक की बहुत बड़ी उपलब्धि मानी जाती है ।

डॉ. विजेंद्र प्रताप सिंह और डॉ. रवि कुमार गोंड द्वारा संपादित कहानी संग्रह 'कथा और किन्नर' 2018 में प्रकाशित हुआ था । इस कहानी संग्रह में संकलित निम्न कहानियाँ हैं- डॉ. नंदलाल भारती 'हिजड़ा', महेंद्र प्रताप सिंह के 'किन्नर कथा', डॉ अरविंद कुमार 'एक जैसे', डॉ विजेंद्रप्रताप सिंह की 'प्रतिशोध' ईशा शर्मा की 'वो.... एक किन्नर', अलका प्रमोद 'इतनी देर में', अखिलेश निगम अखिल 'आखिर कब तक', कविता विकास 'पहचान', रवि कुमार गोंड 'प्रतिमान', नीना अन्दोत्रा पठानिया 'मिस्टी', संगीता सिंह भावना 'दर्द', सुरेश कुमार 'अंधेरे की परते', अजयकुमार चौधरी 'वो किन्नर...',कुंदन 'दुआ की कीमत', अनुराधा सैनी 'पीड़ा अन्तर्मन की', डॉ. निरुपमा 'बरगद की छांव', वंदना सहाय 'किन्नर', डॉ. चंद्रेश कुमार छतलानी 'भय किससे, 'अपमानित', 'हिजड़ा चरित्र', पारस दासोत 'घर', श्री कृष्ण सैनी 'हिजड़ा', किरनसिंह 'संझा' को इस संग्रह में संग्रहीत किया है ।

'दास्तान-ए-किन्नर' कहानी संग्रह का संपादन पुरोबी ए. भण्डारी ने किया है । इस कहानी संग्रह के खंड-1 में कहानियाँ और खंड-2 में लघुकथाओं का संकलन किया गया है । इस कहानी संग्रह में 1980 में रचित सुभाष अखिल की दरमियाना, डॉ. दिलीप मेहरा की दापा, डॉ ललितसिंह राजपुरोहित द्वारा रचित निलोफर, डॉ लवलेश दत्त की तराजू, महेन्द्र भीष्म की माई इत्यादि कहानियों और लघुकथाओं का संकलन किया गया । दास्तान-ए-किन्नर में इस प्रकार अभिव्यक्त

किया है कि- "समाज ने हमेशा से ही उनके अस्तित्व को नकारा है बल्कि यूँ कहें कि पशु समकक्ष खड़ा किया गया है । हिंदी साहित्य में भी इसकी भरपुर अनदेखी हुई है । इन्हें हमेशा से ही हास्य- पात्र के रूप में ही प्रस्तुत किया गया है, जिसके फलस्वरूप तृतीयलिंगी वर्ग साहित्य में अपने अस्तित्व को स्थापित नहीं कर पाये ।"[25] अनेक रचनाकारों ने किन्नर समुदाय के प्रति संवेदनशील होकर मानव समाज का अभिन्न अंग के रूप में स्वीकारते हुए उनके सामाजिक न्याय और मानवाधिकार के संदर्भ में लेखन किया है ।

1.6.3 हिंदी आत्मकथा और जीवनी में क्वीर विमर्श

आत्मकथा साहित्य और समाज का वह पारदर्शी आईना है, जिसमें लेखक और समाज का साफ चेहरा दिखाई देता है । लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी द्वार रचित आत्मकथा 'मैं हिजड़ा...मैं लक्ष्मी' (अनुवाद डॉ. शशिकला राय) में उनके व्यक्तित्व, संघर्ष, सफलता, समाज, समुदाय और परिवार के प्रति समर्पण आदि द्वंद्वों को देख सकते हैं । लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी ने हिजड़ा समुदाय के पिछड़ेपन और हाशिये का शिकार होने का दोष सिर्फ सभ्य समाज पर नहीं थोंपा बल्कि वे हिजड़ा समुदाय को भी दोषी मानती है । इस आत्मकथा में लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी का संघर्ष, सफलता और समर्पण के साथ किन्नर समुदाय की पारिवारिक, राजनैतिक, शारीरिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, समस्याओं को व्यक्त करता है ।

भारतीय किन्नरों के लिए इतना आसान नहीं था कि वे अपनी 'स्वयं पहचान' के साथ शिक्षा अर्जित कर लें । आज तक जितने पढ़े-लिखे हिजडा और ट्रांसजेंडर है, उन्होंने लड़के या लड़की की लैंगिकता में प्रवेश लेकर स्कूली शिक्षा प्राप्त की है । जब उम्र के साथ उनके हाव-भाव बदलने लगे तब शिक्षकों और साथियों को शोषण का शिकार होना पड़ा । उन्हीं में से कुछ किन्नरों ने अपने जज्बातों को छुपाते-छुपाते शिक्षा पूरी करके स्वयं को स्थापित करने का सफल प्रयास किया । इन्हीं में से एक मानोबी बंद्योपाध्याय का नाम सबसे आगे है । भारत की पहली

ट्रांसजेंडर कॉलेज प्रिंसीपल पद तक पहुंचकर तृतीयजाति समुदाय को गौरवान्वित करने में सफलता अर्जित की है ।

'मानोबी बंद्योपाध्याय' की जीवनी 'पुरुष तन में फँसा मेरा नारी मन' का हिंदी अनुवाद रचना भोला 'यामिनी' ने किया । अपनी असल पहचान स्थापित करने की एक ट्रांसजेंडर के साहसपूर्ण संघर्ष की अद्भुत जीवन-यात्रा इस जीवनी में मिलती है । पुरुष तन में जन्म लेने वाले सोमनाथ ने मानोबी बंद्योपाध्याय के रुप में पी.एच.ड़ी की उपाधि भी प्राप्त करके परिवार और समाज का नाम रोशन किया । यह जीवनी भारतीय माता-पिता के लिए प्रेरणादायी है जिस प्रकार सोमनाथ के माता-पिता ने समाज की इज्जत मर्यादा की परवाह नहीं करते हुए संतान हित में खड़े रहे हैं । उन्होंने अपनी अलैंगिक संतान को अच्छी परवरिश और शिक्षा देने में कोई कसर नहीं छोड़ी । उसी परवरिश और शिक्षा के कारण मानोबी बंद्योपाध्याय देश की पहली ट्रांसजेंडर कॉलेज प्रिंसीपल बनकर किन्नर समाज की मिशाल पेश की है ।

1.6.4 हिंदी काव्य साहित्य में क्वीर विमर्श

क्वीर विमर्श हिंदी काव्य में केवल एक यौनिक पहचान का प्रतिपादन नहीं, बल्कि समाज की उन रूढ़ियों और पूर्वाग्रहों का विरोध है, जो लिंग और यौनिकता को संकीर्ण श्रेणियों में सीमित कर देते हैं । आधुनिक हिंदी साहित्य में इस विमर्श ने प्रेम, स्वीकृति, और सामाजिक संघर्ष के माध्यम से अपनी जगह बनाई है ।

कवियों ने अपनी रचनाओं में समलैंगिकता, लिंग विविधता, और सामाजिक अस्वीकृति जैसे मुद्दों को प्रस्तुत करते हुए समाज के उन पहलुओं को उजागर किया है, जिन्हें अक्सर अनदेखा कर दिया जाता है। रचनाकारों की इधर-उधर बिखरी कुछ रचनाएँ सोशल मीडिया पर और कुछ रचनाएं पत्र-पत्रिकाओं में देखने को मिलते है। इसी कड़ी में लता अग्रवाल का मौलिक काव्य संग्रह 'सिसकती दास्तान' तृतीयपंथी समुदाय पर केंद्रित है । इस कविता संग्रह में लगभग 122 छोटी-मोटी कविताओं का संकलन किया गया है । कवयित्रि ने थर्डजेंडर समुदाय की

सिसकती दास्तान के माध्यम से रिश्तों की तड़प,परिवार के प्रति लगाव, निराशा, तिरस्कार, नपुंसकता का दर्द, रिश्तों की नामंजूरी, अधूरी देह का अफसोस, सामाजिक बहिष्कार, सामाजिक और पारिवारिक पृष्ठभूमि में न्याय की उम्मीद, अतीत और भविष्य की चिंता इत्यादि विषयों पर अपनी संवेदनाएँ प्रकट की है । प्रसतुत विधा के माध्यम से रचनाकारों ने हशियएकृत जनजाति की समस्याओं को समाज के सामने लाने का सराहनीय प्रयास हिन्दी साहित्य के किया है ।

निष्कर्ष

क्वीर (Queer) शब्द और विचारधारा, जो लैंगिकता और लिंग की पारंपरिक परिभाषाओं से परे है, समाज में एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है । यह न केवल समलैंगिकता, उभयलिंगीता या ट्रांसजेंडर पहचान को स्वीकार करता है, बल्कि इन पहचानों के बीच के बारीक भेदों और लिंग/लैंगिकता के विविध रूपों को भी चुनौती देता है। क्वीर का अर्थ अब केवल एक संकीर्ण पहचान नहीं रह गया है, बल्कि यह एक व्यापक समाजशास्त्रीय अवधारणा बन चुका है, जो मानवीय अनुभवों के विविध रूपों को स्वीकार करता है । इसके इतिहास में विभिन्न आंदोलनों और विमर्शों का योगदान है, जिनमें क्वीर थ्योरी का विकास हुआ, जिसने लिंग, लैंगिकता और समाज के अन्य सामाजिक घटकों पर नए दृष्टिकोण से विचार किया।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. भला यह जण्डर है क्या?, कमला भसीन, वीणा शिवपुरी (अनु), जोगोरी प्रकाशन, वर्ष 2000, पृ.3
2. https://archive.org/details/sexgenderondevel0000stol – Sex and gender : the Development and Feminity- Robert Steller
3. https://www.academia.edu/1344672/Women_feminism_and_biology_The_feminist_challeng e
4. Gender Trouble: Feminism and the Subversion of identity, Judith butler, 1990 , Routledge, page no 32
5. क्वीर विमर्श, डॉ वनजा,सतरंगी प्रकाशन 2021, पृ 12
6. क्वीर विमर्श, डॉ वनजा,सतरंगी प्रकाशन 2021, पृ 12
7. https://dictionary.cambridge.org/dictionary/english/queer
8. https://www.cosmopolitan.com/author/208640/sophie-saint-thomas/
9. अन्नामरिए जागोसे , क्वीर थ्योरी आन इंट्रोडक्शन, 1996 पृ 1
10. https://www.collinsdictionary.com/hi/dictionary/english/queer
11. क्वीर सिटी, पीटर एक्रोय्,रैंडम हाउस बुक्स, 2017,पृ 5
12. Gender Trouble: Feminism and the Subversion of Identity, Judith Butler, 1990, Routledge, page 25
13. The Second Sex (1949), Simone De Beauvoir , 2010, kindle edition, introduction part.
14. The History of Sexuality, Michel Foucault, Vintage Books, 1971 page number 24
15. Gender Trouble: Feminism and the Subversion of Identity, Judith Butler, 1990, Routledge, page 32
16. The History of Sexuality, Michel Foucault, Vintage Books, 1971 page no: 24
17. प्राचीन प्रेम और नीति की कहानियाँ ,रंगेय राघव ,पृ.: 165
18. प्राचीन प्रेम और नीति की कहानियाँ ,रंगेय राघव , पृ.: 165
19. प्राचीन प्रेम और नीति की कहानियाँ ,रंगेय राघव,, पृ. : 166
20. प्राचीन प्रेम और नीति की कहानियाँ ,रंगेय राघव , पृ.: 167

21. देवदत्त पटनायक- धर्म और समलैंगिकता, पेंगुईन बुक्स,2022, पृ 34

22. रामचरितमानस, दोहा 87 क

23. देवदत्त पटनायक- धर्म और समलैंगिकता, पेंगुईन बुक्स,2022, पृ 93

24. https://www.scptbzz.org,विमर्श का अर्थ एवं परिभाषा by Bandey 16 feb 2021

25. सं,पुरोबी ए,भण्डारी, दास्तान-ए-किन्नर,पृ.सं-भूमिका